ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

वैशाख-ज्येष्ठ संवत् नानकशाही ५५५ मई 2023 वर्ष १६ अंक ९

सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया ने जब किला राम रौणी (श्री अमृतसर) में घिरे सिंघों के जैकारों की आवाज़ सुनी तो वे अदीना बेग का साथ छोड़ कर सिंघों के साथ आ मिले और अद्वितीय पराक्रम दिखाते हुए दुश्मनों के दाँत खट्टे किए।

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

वैसाख-ज्येष्ठ, संवत् नानकशाही 555
वर्ष 16 अंक 9 मई 2023

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4

संपादकीय 5

बाणी के बोहित : श्री गुरु अरजन देव जी 9
-डॉ. मनजीत कौर

सिक्ख संघर्ष के महानायक : सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया 12
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ

शूरवीर सिक्ख योद्धा : सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया 17
-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल

सिक्ख मिसल काल की अद्वितीय धरोहर : बुंगा रामगढ़िया 19
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'

सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया (कविता) 23
-डॉ. जसप्रीत कौर फलक

भगता की चाल निराली 24
-डॉ. परमजीत कौर

सरदार करम सिंघ हिस्टोरियन 31
- स. सवरनदीप सिंघ नूर

बच्चों को सिखाएं सिक्ख मार्शल आर्ट : गतका 4०
-स. गुरप्रीत सिंघ

खबरनामा 47

गुरबाणी विचार

हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥
हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥
माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥
रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि ॥
जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥
जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि ॥
आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥
साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥
हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥४॥ *(पन्ना १३४)*

पंचम पातशाह बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में ज्येष्ठ मास के वातावरण और इस मास में की जाने वाली जीव-जगत की क्रियाओं की पृष्ठभूमि में मनुष्य जीवन रूपी वर्ष के इस खंड को प्रभु-नाम के व्यक्तिगत मनन और सामूहिक अथवा संगती विचार द्वारा सफल करने का सुमार्ग बख्शिश करते हैं।
गुरु जी फरमान करते हैं कि ज्येष्ठ मास में परमात्मा अथवा उसके नाम के साथ जुड़ना चाहिए, जिसके समक्ष सभी जीव झुकते हैं अथवा जो सर्वशक्तिमान है। परमात्मा ऐसा मित्र है जिसका दामन पकड़ने से जीव को कोई अन्य जकड़ नहीं सकता अर्थात् यम या मृत्यु का भय उसको भयभीत नहीं करता।

गुरु जी कथन करते हैं कि सांसारिक लोग प्राय: हीरे-मोतियों को प्राप्त करना चाहते हैं और प्राप्त करने के पश्चात् फिर वे इस संशय में चिंतित रहते हैं कि कहीं इस अमूल्य मोती को कोई चुरा कर न ले जाए। परमात्मा का पावन नाम ही ऐसा विशेष मोती है जिसे कोई चोरी नहीं कर सकता। मनुष्य को नाम का धारक बन कर सदीवी सुख, आनंद मिलता है। जितने भी रंग हमको अच्छे लगते हैं वे सब परमात्मा के ही रंग हैं। परमात्मा की महान इच्छा ही चारों ओर व्याप्त है। जीव वही करते हैं जो परमात्मा को अच्छा लगता है। जिन जीवों को परमात्मा ने अपना बना लिया है अर्थात् जो जीव उसकी सच्ची स्तुति में लगे हैं उनको शाबाश कहो! मात्र निज प्रयास से (यदि परमात्मा की इच्छा न हो) तो कुछ भी नहीं होता। यदि ऐसा संभव हो सकता तो कोई भी जीव न प्रभु-नाम से बिछड़ता, न ही दुखी होता। सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जिनको साधु अथवा सतिगुरु का साथ मिल जाए वे आनंद-प्रसन्न रहते हैं। जिन मनुष्यों के मस्तक के भाग्य जागृत हो जाते हैं उनको ज्येष्ठ का उष्ण एवं शुष्क मास भी रंग-आनंद से भरपूर लगता है।

संपादकीय

कौमी चिंतन बनना चाहिए हमारा शताब्दियां मनाने का उद्देश्य!

किसी कौम के किरदार की सृजना धर्म-अग्रदूतों द्वारा दर्शाए आदर्शों पर निर्भर करती है। श्री गुरु नानक देव जी के रूहानी और मानवतावादी विचारों ने सदियों से ग़ुलामी की पीड़ा सहन कर मानसिक तौर पर मुर्दा हो चुकी जनता को पुनर्जीवन दिया। देश-कौम की सीमा से ऊपर उठकर समूह मानवता को अपने परिरंभण में लिया। श्री गुरु अंगद देव जी ने बलवान चेतना के साथ-साथ शारीरिक बलवानता को भी आवश्यक समझते हुए मल्ल अखाड़ों का निर्माण करवाया। अकेली बलवान चेतना या अकेला बलवान शरीर शस्त्र का सही उपयोग नहीं कर सकता। दोनों का संगम हो जाने पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने कौम को शस्त्रधारी बनाया। दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खंडे-बाटे की पाहुल छका कर शस्त्रधारी 'खालसा पंथ' की सृजना की। गुरु साहिबान द्वारा दर्शाए आदर्शों पर चल कर गुरसिक्खों ने ऐसे विशुद्ध कौमी किरदार की सृजना की, जिसका आदर्श कौमी उन्नति के साथ-साथ हमेशा मानवतावादी भी रहा। बाबा बंदा सिंघ बहादुर, मिसल-काल और महाराजा रणजीत सिंघ का मानवतावादी राज-प्रबंध इसकी आदर्श मिसाल रहा है।

सरवंशदानी पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने नांदेड़ की धरती से बाबा बंदा सिंघ बहादुर को सिंघ सजा कर ज़ुल्म का नाश करने के लिए पंजाब भेजा। गुरु साहिबान के आशय वाले विनम्र राज की स्थापि के लिए असंख्य सिंघ-सिंघणियों, बच्चों, बुज़ुर्गों सहित बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के बाद हुकूमत द्वारा सिक्खों पर सरेआम शुरू हुए ज़ुल्म के विरुद्ध सिक्ख संग्राम की बहुत लम्बी दास्तान है। इसमें नवाब कपूर सिंघ, सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया, सरदार बघेल सिंघ आदि सिंघों ने हुकूमती ज़ुल्म के विरुद्ध सिक्ख संघर्ष को आगे बढ़ाया।

लंबा समय ग़ुलामी सहन कर भारतीय समाज बेगैरत भरा जीवन जीने का आदी हो चुका था। यह बेगैरत समाज मानसिक ग़ुलामी स्वीकार कर अपनी भाषा, अपने पहनावे और अपने सभ्याचार को तिलांजलि देकर ज़लालत से भरपूर ज़िंदगी जीने के लिए रज़ामंद हो चुका था।

अठारहवीं सदी के सिक्ख शूरवीर सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया तथा साथी सिंघों ने गुरमति विचारधारा ''जे जीवै पति लथी जाइ।। सभु हरामु जेता किछु खाइ।।'' के अनुसार आत्मसम्मान से भरपूर जीवन जीने के लिए ज़ुल्मी मुग़ल हुकूमत के विरुद्ध लंबे समय तक संघर्ष किया और विदेशी हमलावरों के सामने ढाल बन कर भारतवासियों के स्वाभिमान के रक्षक बने। सिक्ख तवारीख को पढ़ कर देखें तो एक-एक दिन का इतिहास, जो हमारे पुरखों—— सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया तथा साथी सिंघों ने सृजित किया है, सदैवकालीन मानवता के लिए प्रेरणा-स्रोत बना रहेगा।

अठारहवीं सदी के सिक्ख संघर्ष में सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया का नाम पहली पंक्ति में आता है। सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया तेज प्रताप वाले, निपुण नीतिवान, बहादुर, बुद्धिमान, दयालु, न्यायकारी शख्सियत और दूरंदेशी सोच के मालिक थे। सरदार साहिब ने मानवाधिकारों, पंथ की चढ़दी कला, देश की रक्षा और मज़लूमों की सेवा के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने विदेशी आक्रांताओं की तलवार के आगे सीना तान कर सदियों से सताए जा रहे भारतीयों को सकून भरी ज़िंदगी जीने का अवसर प्रदान किया। ग़ज़नी के बाज़ारों में बेआबरू होती भारतीय स्त्रियों की आबरू को बचाया। पहाड़ी इलाके कटोची, चम्बा, हरीपुर आदि से लेकर दिल्ली, मेरठ तक फतह हासिल की। बहुत-से किलों का निर्माण करवाया।

ऐसे महान सिक्ख जरनैल सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया की तीसरी जन्म शताब्दी मनाते हुए उनके जीवन-संघर्ष और पंथ-प्रस्त सोच से दिशा लेकर कौम की चढ़दी कला के लिए प्रयत्नशील होने की ज़रूरत है। इस अवसर पर पंथ के मौजूदा हालात पर चिंतन करने की भी आवश्यकता है।

१८वीं सदी में जब सिक्ख दीवाली, बैसाखी के अवसर पर इकठ्ठा होते तो मुग़ल हुकूमत इन पंथक जलसों को असफल करने की कोशिशें करती थी। आज आज़ाद भारत में, जिसकी आज़ादी के लिए मुग़ल हकूमत और अंग्रेज़ शासन-काल में सबसे अधिक कुर्बानियां सिक्खों ने दी हैं, उस कौम की बैसाखी के पवित्र पर्व पर तख़्त श्री दमदमा साहिब जाते हुए श्रद्धालुओं की पंजाब सरकार द्वारा पुलिस के माध्यम से तलाशी लेना जहाँ शर्मनाक कारा है, वहीं सिक्खों के लिए यह घटनाक्रम बेगानगी का एहसास कराने वाला भी है।

सरकार का यह घटनाक्रम सिक्खों को मानसिक पीड़ा पहुंचाने वाला है। जिस क्षेत्र में सर्वधर्म न्यायकारी शासन स्थापित करने के लिए खालसा पंथ ने लंबा समय संघर्ष किया था, उस धरती पर यदि आज गुरुधामों के दर्शन करने जाती सिक्ख संगत की तलाशी ली जाती है तो आने वाले समय में क्या हालात होंगे, इस बारे में चिंतन करने की ज़रूरत है। आज देश में तथाकथित नेशनल मीडिया द्वारा बहादुर सिक्ख कौम को आतंकवादी, अलगाववादी एलाने जाने की कोशिशें की जा रही हैं। निर्दोष सिक्ख नौजवानों पर यू. ए. पी. ए. कानून लगा कर उन्हें जेलों में ठूंसा जा रहा है। अपने जरनैलों की शताब्दियां मनाते हुए इस बारे में भी चिंतन कर इस झूठे प्रचार के विरुद्ध रणनीति तैयार करने की आवश्यकता है।

चाहिए तो था कि भारत में स्कूलों, कॉलेजों और यूनिवर्सिटियों तक इतिहास के पाठ्यक्रम में देश की मान-मर्यादा के रक्षक बाबा बंदा सिंघ बहादुर, नवाब कपूर सिंघ, सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया, बाबा बघेल सिंघ, अकाली फूला सिंघ, सरदार हरी सिंघ नलवा, जरनल जोरावर सिंघ, सरदार शाम सिंघ अटारी, भाई महाराज सिंघ आदि के अलावा गदरी बाबाओं का इतिहास विस्तार सहित शामिल कर पढ़ाया जाता। सिक्ख शूरवीरों की बहादुरी की गाथाएं पढ़ाना तो दूर की बात रही, बल्कि उल्टा सिक्ख इतिहास को बिगाड़ कर पेश करने की कोशिशें हो रही हैं। सिक्खों की कुर्बानियों को भुला कर सिक्खों का अक्स बिगाड़ा जा रहा है। अपने सिक्ख जरनैलों का इतिहास लिखने, उसे संभालने और उसका प्रचार करने के यत्न हमें ख़ुद ही करने पड़ेंगे। हमारे सिक्ख जरनैलों की तस्वीरें हमारे घर का शृंगार बननी चाहिए, ताकि हमारे बच्चों में इनका इतिहास जानने की रुचि पैदा हो।

धार्मिक सिक्ख जरनैलों की शताब्दियां मनाते हुए पंथक आत्मविश्लेषण करने की भी ज़रूरत है। गुरु साहिबान द्वारा कृपा प्राप्त धरती पंजाब पर कभी हमारे पुरखों—— शूरवीर योद्धाओं ने हक-सच, न्याय की ख़ातिर तेग उठाई थी, अपना घर-परिवार दांव पर लगा कर पंथ की चढ़दी कला को बरकरार रखा था। जिस धरती पर खालसा पंथ ने सिक्खी केशों-श्वासों संग निभाई थी, उस पंजाब की धरती पर नशे और पतितपन का रुझान आज हमारे लिए गंभीर चिंतन का विषय है।

अपने सिक्ख जरनैलों की शताब्दियां मनाते हुए हमारी समूह सिक्ख जत्थेबंदियों का फ़र्ज़

बनता है कि अपनी नौजवान पीढ़ी को गुरु साहिबान तथा गुरसिक्खों की असंख्य शहादतों से सृजित, अतुलनीय इतिहास से अवगत करवाने के प्रयत्न किए जाएं! अपने बच्चों को गुरमति सिद्धांतों में दृढ़ करने और सिक्खी विरासत के साथ जोड़ने के यत्न किए जाएं, ताकि उन्हें कोई कुमार्ग पर न ले जा सके! नौजवान पीढ़ी में पैदा हो चुके पतितपन के रुझान को रोक पाने के लिए इसके कारणों की तलाश कर इसके समाधान के लिए सार्थक हल ढूँढे जाएं! सिक्खी स्वरूप से उदासीन हो रहे नौजवानों के माता-पिता इसके प्रति अपनी पारिवारिक ज़िम्मेदारी समझ कर अपने घरों में गुरमति का ऐसा माहौल सृजित करने के लिए वचनबद्ध हों, जिससे बच्चे पतितपन त्याग कर बाणी व बाणे के धारक बन सकें! इन शताब्दियों को मनाते हुए प्रत्येक नानक नाम-लेवा सिक्ख यह प्रण करे कि हम डेरावाद, देहधारी गुरु-डंम, नशे, पतितपन, कन्या भ्रूण- हत्या, दहेज़ आदि अलामतों को ख़त्म करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे!

सिक्ख माता-पिता का फ़र्ज़ बनता है कि वे अपने बच्चों को गुरमति के धारक, ऊँचे इख़लाक वाले जज, वकील, आई. ए. एस., आई. पी. एस. आफिसर आदि बनाने के यत्न करें, जिससे पंजाब में सिक्खों का सामाजिक, राजनैतिक आधार और मज़बूत हो सके। सिक्ख नौजवान पीढ़ी में विदेशों में जाने का बढ़ रहा रुझान भी चिंतन का विषय है। इस रुझान के चलते कहीं ऐसा न हो कि हम अपने मूल क्षेत्र पंजाब में ही अल्पसंख्यक बन जाएं और जिस क्षेत्र में राज-भाग के लिए कभी ख़ालसे ने तेग उठाई थी, वहाँ कोई और आकर खालसा पर राज करे। सिक्ख जरनैलों की शताब्दियां मनाते हुए इस बारे में गंभीर चिंतन करना चाहिए।

शताब्दियां मनाते हुए पंजाब के धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक मसलों के बारे में कौम को सिर जोड़ कर चिंतन करने की ज़रूरत है, जिससे पंजाब हरा-भरा, हँसता-बसता रहे और हमारा शताब्दियां मनाना सफल हो जाए।

-सतविंदर सिंघ फूलपुर

बाणी के बोहित : श्री गुरु अरजन देव जी

*-डॉ. मनजीत कौर**

शहीदों के सिरताज, ज्ञान की अविरल धारा, बाणी के बोहित (जहाज), जिन्होंने अपने महान अद्वितीय व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सूर्योदय वाली दिशा से लेकर सूर्यास्त वाली दिशा तक आध्यात्मिक, रूहानी प्रकाश विकिरण कर, विश्व भर को अंधकार के गर्त से निकाल रोशन किया, ऐसे महान गुरु श्री गुरु अरजन देव जी का प्रकाश १९ वैसाख, संवत् १६२० अर्थात् १५ अप्रैल, १५६३ ई. को गोइंदवाल साहिब, जिला तरनतारन (पंजाब) में चतुर्थ गुरु श्री गुरु रामदास जी तथा माता भानी जी के घर हुआ।

श्री गुरु अरजन देव जी माता भानी जी के सबसे छोटे और होनहार सुपुत्र थे। इनके नाना श्री गुरु अमरदास जी अपने इस दोहते (नाती) से अत्यधिक प्यार करते थे। एक दिन जब माता भानी जी अपने पिता जी के घर आई हुई थीं, उस समय उनके इस सुपुत्र की आयु करीब ढाई वर्ष थी। इतिहासकार लिखते हैं कि माता जी ने बालक को कतरनों से एक छोटी-सी गेंद बना कर दी, जिससे वे खेल रहे थे। अचानक गेंद इनके नाना जी के उस कमरे में चली गई जहां बैठ कर श्री गुरु अमरदास जी प्रभु-चिन्तन में लीन थे। ढाई वर्ष के इस बालक ने दरवाजा खोलने का अपने नन्हें हाथों से भरसक प्रयास किया। जब दरवाजा नहीं खुला तो अपने सिर का बल लगाकर दरवाजा खोला और अंदर प्रवेश कर गए। जैसे ही उस पलंग को पकड़ा जिस पर गुरु साहिब विराजमान थे, इधर गुरु जी ने नेत्र खोले, उधर से लगभग दौड़ते हुए माता भानी जी ने तीव्रता से बालक को गोद में उठा लिया। माता भानी जी बालक पर नाराज होने लगीं। इस दौरान श्री गुरु अमरदास जी ने फरमाया कि इसे यहीं रहने दो और कुछ भी नहीं कहो, क्योंकि गुरु जी का इस बालक से गहरा लगाव था और दूसरा, वे भविष्य की गतिविधियों को अभी से अनुभव कर रहे थे। इसी चिन्तन के दौरान गुरु जी ने वचन किया—— ''दोहिता, बाणी का बोहिता!''

आप बहुत ही शांतचित्त, उदार प्रवृत्ति के मालिक, पूर्ण ब्रह्मज्ञानी थे। गुरबाणी-अध्ययन के साथ-साथ उसकी विचार करना, आठों पहर माता-पिता की आज्ञा में रहना, आपके सहज सरल स्वभाव में शामिल था।

आपका विवाह मउ (मौ) गाँव, जिला जलंधर के श्री क्रिशन चंद जी की सुपुत्री माता गंगा जी के साथ हुआ। आपके गृह में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जन्म (प्रकाश) हुआ। तीन भाइयों में आप सबसे छोटे होते हुए भी गुरुआई के सबसे योग्य अधिकारी माने गए।

श्री गुरु रामदास जी ने जब अपने सबसे छोटे सुपुत्र श्री गुरु अरजन देव जी को गुरुआई पर

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

विराजमान किया, उसी दिन से बड़े भ्राता प्रिथीचंद की ईर्ष्या का कोई पारावार नहीं रहा और इस महान पद की प्राप्ति हेतु वह अनेक तरह के षड्यंत्र रचने लगा। इसके बिलकुल विपरीत प्रिथीचंद की कुटिल चालों को नजरंदाज कर शांतमयी ढंग से श्री गुरु अरजन देव जी ने समूची मानवता हेतु ज्ञान का प्रकाश विकिरण करते हुए नैतिक एवं आत्मिक शक्तियों को विकसित किया, ताकि अज्ञानता का अंधकार तिरोहित हो सके और ज्ञान का प्रकाश सर्वत्र फैल सके। गुरु पातशाह का पावन फरमान है :

हरि हरि गुरु गुरु करत भरम गए।।
मेरै मनि सभि सुख पाइओ।।१ ।।रहाउ ।।
बलतो जलतो तउकिआ
गुर चंदनु सीतलाइओ ।।१ ।।
अगिआन अंधेरा मिटि गइआ
गुर गिआनु दीपाइओ।।२ ।।
पावकु सागरु गहरो
चरि संतन नाव तराइओ।।(पन्ना २४१)

ज्ञान की श्रेष्ठता को गुरु साहिब ने प्रकट करते हुए स्पष्ट किया है :

सगल तत महि ततु गिआनु।।
सरब धिआन महि एकु धिआनु।।
हरि कीरतन महि ऊतम धुना।।
नानक गुर मिलि गाइ गुना।।(पन्ना ११८२)

तत्त (तत्त्व) ज्ञान के बिना पुस्तकीय (किताबी) ज्ञान बोझ मात्र बन कर रह जाता है। गुरु पंचम पातशाह ने तो वास्तविक शिक्षित उसी को माना है जिसका विवेक विकसित हो गया है और वही वास्तव में सबसे धनवान भी है, जैसा कि गुरु पातशाह का फरमान है :

सोई गिआनी जि सिमरै एक।।
सो धनवंता जिसु बुधि बिबेक।।(पन्ना ११५०)

श्री अमृतसर को विकसित करने तथा सरोवर को पक्का करवाने के गुरु साहिबान ने विशेष प्रबंध किए। संगत गुरु जी के हुकमनामे पाकर कार-भेंट-सेवा लेकर श्री अमृतसर बहुतायत से पहुंचने लगी। दूसरी ओर, प्रिथीचंद ईर्ष्यावश कुटिल चालें चलता रहा और रास्ते में ही संगत से कार-भेंट स्वयं को गुरु बता कर वसूल करता रहा। गुरु-घर में रसद-भेंटा आदि न पहुंचने से लंगर के प्रवाह भी रुकने लगे। भाई गुरदास जी जब आगरा से वापिस आए तो उन्होंने लंगर की स्थिति देखकर प्रिथीचंद की साजिशों का पता लगाया। भाई गुरदास जी, बाबा बुड्ढा जी एवं अन्य प्रमुख सिक्खों के सामूहिक सहयोग से कार-भेंट सीधी गुरु साहिब के पास पहुंचनी शुरू हो गई। फलस्वरूप निर्माण-कार्यों में पुनः गति आई और लंगर की व्यवस्था भी सुचारू रूप से चलने लगी। इसके साथ-साथ गुरु जी ने 'संतोखसर' सरोवर को भी पक्का करवाया।

अमृत सरोवर के बीचो-बीच गुरु जी ने श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण करवाया, जिसकी आधारशिला साँई मियां मीर जी से रखवाई। इस संदर्भ में ज्ञानी गिआन सिंघ श्री हरिमंदर साहिब की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं कि ''यह ऐसा तीर्थ है, जहां अनेक लोगों को 'रोशनी' मिली। यह 'सचखंड का टुकड़ा' है। इसके दर्शन करके बुझी हुई आत्माएं भी जगमगा उठती हैं, नाम-सिमरन खुद ही चल पड़ता है और हृदय रसमयी हो जाता है। यह अदब का स्थान है।''

इसके अतिरिक्त अन्य नगर बसाना, धर्मशालाओं का निर्माण, कुष्ठरोगियों हेतु घर बनवाना आदि अनेक पुनीत कार्य गुरु साहिब द्वारा सम्पूर्ण हुए।

विवाहोपरांत वर्षों की प्रतीक्षा के बाद गुरु पंचम पातशाह के गृह में जब साहिबजादे श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जन्म (प्रकाश) हुआ तो यह खबर प्रिथीचंद के लिए नागवार हो गुजरी, क्योंकि वह इसी आस में बैठा था कि गुरु जी के घर कोई संतान पैदा नहीं होगी और अब गुरगद्दी का वारिस मेरा पुत्र मेहरबान ही होगा। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के जन्म (प्रकाश) के साथ ही उसके दुष्ट इरादों पर पानी फिर गया।

प्रिथीचंद के जब सारे मंसूबे असफल हुए तो उसने सुलही खान को गुरु साहिब के खिलाफ हमला करने हेतु तैयार किया। वह भी गुरु साहिब तक न पहुंच सका और ईटों के भट्टे में गिर कर मारा गया।

गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के महान पुनीत कार्यों में से एक और अद्वितीय कार्य है—— श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना करना।

इस युगो-युग अटल पावन ग्रंथ के लेखन का कार्य भाई गुरदास जी से १६०१ ई. में प्रारंभ करवाया, जो १६०४ ई. में सम्पूर्ण हुआ। पवित्र धार्मिक सर्वसाझे स्थल पर १६०४ ई. में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पहला पावन प्रकाश किया गया। गुरु पंचम पातशाह द्वारा ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा जी को पहला ग्रंथी नियुक्त किया गया। आलौकिक ग्रंथ के पावन प्रकाश के उपरान्त हुकमनामा आया :

संता के कारजि आपि खलोइआ
हरि कंमु करावणि आइआ राम।।
धरति सुहावी तालु सुहावा
विचि अंम्रित जलु छाइआ राम।। (पन्ना ७८३)

श्री गुरु अरजन देव जी की बाणियों में 'बारह माहा', 'बावन अखरी', 'गउड़ी थिती', 'सुखमनी', 'गाथा' आदि हैं। गुरु पंचम पातशाह की बाणी ३० रागों में सुशोभित है।

श्री गुरु अरजन देव जी ने सबमें परमेश्वर की ज्योति का दर्शन करते हुए ''सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन।।'' (पन्ना ६७१) तथा ''ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई।।'' (पन्ना १२९९) के मधुर आलाप द्वारा इस पावन ग्रंथ में विभिन्न धर्मों, जातियों, वर्णों, प्रांतों, बोलियों के संतों-भक्तों की बाणी को समान आदर सहित दर्ज किया। श्री गुरु अरजन देव जी जहां बाणी के बोहित हैं, वहीं शहीदों के सिरताज भी हैं।

गुरु जी की अद्वितीय शहादत सिक्ख जगत में क्रांतिकारी मोड़ साबित हुई। गुरु साहिब के आदेशानुसार ही उनके सुपुत्र श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने गुरुआई-प्राप्ति के पश्चात् मीरी तथा पीरी की दो कृपाणें पहन कर संत-सिपाही का रूप धारण किया।

श्री गुरु अरजन देव जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे, जिनका व्यक्तित्व तथा कृतित्व विलक्षण और वन्दनीय है। मानव-मात्र के सर्वांगीण विकास हेतु गुरु जी का फरमान है —— हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति।। (पन्ना ५२२) इतने महान कार्य सम्पूर्ण करके भी विनम्रता के पुंज निरंतर अकाल पुरख वाहिगुरु का ही शुक्राना करते रहे।

सिक्ख संघर्ष के महानायक : सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा खालसा-साजना एक महान घटना थी, जिसने सिक्खों के लिए एक महाशक्ति के रूप में धर्म और मानवता की अस्मिता की रक्षा की अपार संभावनाए उत्पन्न करने का कार्य किया। लोहे के खंडे-बाटे द्वारा तैयार किये गये अमृत का पान करने के पश्चात पाँच ककार धारण कर सिक्खों ने अपनी भक्ति-भावना को इतनी प्रखरता प्रदान की कि अधर्म और अन्याय का टिक पाना संभव न रहा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ''निसचै करि अपुनी जीत करो'' के संकल्प को सिक्खों ने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया और त्याग, बलिदान का ऐसा अद्‌भुत इतिहास सृजित किया जो वर्तमान पीढ़ियों को विस्मय से भर देता है। श्री गुरु नानक साहिब जी ने सच और परमात्मा के मार्ग पर चलना सिखाया था। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के गुरु-काल तक आते-आते सिक्ख इस मार्ग के सच्चे अनुयाई और पथिक बन चुके थे। श्री गुरु नानक साहिब जी का बताया सिक्खी का यह मार्ग जितना सहज था उतना ही कठिन भी था, इसीलिए इसे बाल से भी अधिक महीन अर्थात् गूढ़ तत्व-ज्ञान का और खड़्ग की धार से भी अधिक तीक्ष्ण अर्थात् भारी अवरोधों से भरा हुआ कहा गया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जीवन-मार्ग के हर प्रकार के अवरोधों को दूर करते हुए धर्म-तत्व को सहेजने का सामर्थ्य प्रदान किया। सांसारिक जीवन के अंतिम चरण में गुरु साहिब ने दो बड़े कार्य एक साथ किए थे। उन्होंने बाबा बंदा सिंघ बहादुर को आशीर्वाद देकर नांदेड़ से पंजाब भेजा और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरुआई पर आसीन किया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर को दसम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का आशीर्वाद, वास्तव में पूरी सिक्ख-कौम को धर्म के मार्ग को सदैव प्रशस्त बनाने का आशीर्वाद था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने पंजाब आकर सिक्खों को संगठित किया और प्रथम व विशाल सिक्ख राज्य स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की सफलता का अर्थ था—— श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा सिक्खों को प्रदान की गई पातशाही को शक्ति और स्थायित्व प्रदान करना। यह पातशाही धरती के किसी क्षेत्रफल से अधिक मन के संकल्प और भावना की थी। सत्य एवं धर्म के संकल्प और भावना को शीर्ष पर ले जाकर उत्पन्न होने वाली अवस्था को ही चढ़दी कला का नाम दिया गया था। यही श्री गुरु नानक साहिब जी के मिशन की सफलता का सूत्र था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने खालसा राज्य स्थापित कर यह सिद्ध किया कि सत्य और धर्म सदैव अविजित रहता है।

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९*

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहीदी के पश्चात लगभग दस वर्ष सिक्खों को पुन: संगठित होने में लग गए। सिक्खों को एकजुट करने के लिए सिक्ख फौज को दो समूहों—— बुड्ढा दल और तरुना दल में विभक्त कर दिया गया। तरुना दल पांच जत्थों—— जत्था शहीदां, जत्था अमृतसरिया, जत्था बाबा कान्ह सिंघ, जत्था डल्लेवालिया और रंगरेटे सिंघों के जत्थे का संघ था। अब सिक्ख मुगलों से टकराव लेने लगे थे। सन् १७४५ में दल खालसा को तीस समूहों में बांटा गया था। ये सारे प्रयास और कदम सिक्खों को एक बड़ी शक्ति के रूप में उभारने के थे। ये सिक्खों में पुन: जाग्रत हो रही सामाजिक और राजनीतिक चेतना के भी प्रतीक थे। कुछ ही समय बीता, अहमद शाह अब्दली के हिंदुस्तान पर हमले होने आरंभ हो गये। इसका मुक़ाबला करने के लिए अनेक नए सिक्ख जत्थे आगे आए। इस तरह सिक्ख जत्थों की संख्या ६६ से अधिक हो गई। २९ मार्च, सन् १७४८ को नवाब कपूर सिंघ के प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए एक सभा में सभी छोटे-बड़े समूहों का आपस में विलय कर एक संगठन 'दल खालसा' का गठन किया गया, जिसका प्रमुख सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को बनाया गया। 'दल खालसा' के अधीन ग्यारह जत्थों का गठन किया गया जिन्हें 'मिसलें' कहा गया। इनमें 'मिसल सांघणीआं' बाद में 'मिसल रामगढ़िया' के नाम से जानी गई। इस मिसल के पहले प्रमुख जत्थेदार नंद सिंघ थे। यह निर्णय हुआ कि सभी मिसलें आंतरिक मामलों में पूर्ण स्वतंत्र होंगी, किन्तु पंथक विषयों पर उन्हें 'दल खालसा' के सारे निर्णय मानने होंगे। श्री अमृतसर साहिब में एक (कच्चा) किला बनाने का कार्य भी आरंभ किया गया, जिसका आरंभिक नाम 'किला रामरौणी' था और बाद में 'किला रामगढ़' हो गया। सभी मिसलों को पंजाब के अलग-अलग क्षेत्रों की देखरेख का दायित्व दिया गया। कन्हईया और रामगढ़िया मिसल को रिआड़की क्षेत्र का दायित्व मिला।

मिसल रामगढ़िया, जिसका पूर्व नाम मिसल सांघणीआं था, के जत्थेदार सरदार खुशहाल सिंघ थे, जिन्हें बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने अमृत छका कर सिंघ सजाया था। वे श्री अमृतसर के निवासी थे। युद्ध में उनके शहीद होने के बाद सरदार नंद सिंघ जत्थेदार बने। सरदार नंद सिंघ ने सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया की वीरता और समर्पण देख कर उन्हें अपना सेनापति बना लिया। सरदार नंद सिंघ के देहांत के बाद सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया मिसल के जत्थेदार बने।

सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया के पूर्वज कभी बढ़ईगिरी का कार्य किया करते थे। सरदार हरदास सिंघ ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से अमृत-पान किया था और लंबे समय तक गुरु साहिब के दरबार में रहे थे। सरदार हजारा सिंघ ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि सरदार हरदास सिंघ ने बड़ी संख्या में लोगों को अमृत छका कर अपने दल में शामिल कर लिया था। उन्होंने बाबा बंदा सिंघ बहादुर के पंजाब आने पर युद्धों में उनका साथ दिया और गुरदासपुर के निकट युद्ध में शहीद हुए थे। सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया के पिता सरदार भगवान सिंघ थे, जो गांव ईचोगिल (इछोगिल) में

रहने लगे थे। सरदार भगवान सिंघ बड़े ही वीर और साहसी योद्धा थे। उनके पाँच पुत्र थे। सरदार जस्सा सिंघ का जन्म सन् १७२३ में हुआ था। यह सिक्ख इतिहास का अंधेरा काल था।

सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया ने किशोरावस्था में ही अपनी पहचान स्थापित कर ली थी। हिंदुस्तान पर जब नादिर शाह ने हमला किया तो मुगल शासन-व्यवस्था पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो गई थी। सिक्खों के साहस को देख कर वह भी स्तब्ध रह गया था और नवाब जकरिया खान से कह कर गया था कि एक दिन ये लोग अवश्य राज करेंगे। जकरिया खान ने इसे बड़ी गंभीरता से लिया और पूरे पंजाब से सिक्खों को गिरफ्तार कर लाहौर भेजने का हुक्म दे दिया। सिक्ख पकड़-पकड़ कर लाहौर भेजे जाने लगे, जहाँ उनका बीच बाजार कत्ल होने लगा। सिक्खों के विरोध को देखते हुए जकरिया खान ने अपने विश्वस्त अदीना बेग को फौज के साथ जलंधर भेज दिया। सिक्खों ने यह तय किया कि सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया को अदीना बेग के पास भेजा जाये जो वहां वार्ता करें, ताकि सिक्खों का कत्लेआम रुक सके। यह बात सन् १७४० ई. की है। वे अति प्रखर और प्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी थे। उनकी वार्ता से अदीना बेग और सभी मुगल दरबारी बहुत प्रभावित हुए। ज्ञानी गिआन सिंघ ने लिखा है कि सरदार जस्सा सिंघ की होशियारी, दानाई और सजीली-छबीली शक्ल देख कर अदीना बेग इतना प्रसन्न हुआ कि उसने उसे बड़े इलाके का सरदार बना दिया। तत्कालीन परिस्थितियों में सिक्खों को भी इसमें अपना हित नजर आया। उस समय जब सिक्ख जंगलों में चले गए थे और घोर विपदा में थे, इतिहासकारों का मानना है कि अदीना बेग से सरदार जस्सा सिंघ का तालमेल सिक्खों के हित में रहा। दुआबा के क्षेत्र में सिक्ख सुरक्षित रहे और उन्हें फिर से संगठित होकर उभरने का अवसर मिल गया। उधर जकरिया खान की मौत के बाद याहिया खान ने कमान संभाली। वह भी अपने पिता की तरह ही अत्याचारी था। उससे भी सिक्खों का टकराव आरंभ हो गया। छोटी-मोटी मुठभेड़ों के बाद एक बड़ा युद्ध हुआ, जिसमें हजारों सिक्ख शहीद हो गए।

एक समय आया, जब याहिया खान को कैद कर शाहनवाज खान नवाब बन बैठा। हालात बराबर बदलते रहे। अप्रैल, सन् १७४८ में मीर मन्नू लाहौर की सत्ता पर काबिज हो गया। वह भी सिक्खों का कट्टर वैरी था। जब उसने सुना कि बंदी छोड़ दिवस (दीवाली) पर बड़ी संख्या में सिक्ख श्री अमृतसर साहिब में जुटे हैं, उसने अदीना बेग को भेज श्री अमृतसर साहिब में सिक्खों के बनाए किले रामरौणी पर आक्रमण करवा दिया। लाहौर से भी फौज भेजी गई। उस समय सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया भी साथ थे। चार महीने तक लगातार सिक्खों से मुठभेड़ें चलती रहीं। एक दिन सरदार जस्सा सिंघ किले के अंदर प्रवेश कर गए। उन्होंने अदीना बेग का साथ छोड़ दिया और स्थिति सिक्खों के पक्ष में पलट गई। मुगलों को वापिस जाना पड़ा। इतिहासकारों का अभिमत है कि वास्तव में सरदार जस्सा सिंघ कभी भी सिक्ख हितों से अलग नहीं हुए थे। अदीना बेग के साथ

रह कर भी वे कौम की चिंता करते रहे थे। इससे सिक्खों के हित सधे थे। सिक्खों ने बाद में यह किला सरदार जस्सा सिंघ को सौंप दिया। सरदार जस्सा सिंघ ने इस किले का नाम 'रामगढ़' रख दिया। किला 'रामगढ़' के नाम से ही उनके नाम के आगे 'रामगढ़िया' शब्द जुड़ा।

यहां उल्लेखनीय है कि रामगढ़िया कोई जाति नहीं है। सरदार जस्सा सिंघ के पूर्वज बढ़ई का कार्य किया करते थे।

सन् १७५३ ई. में मीर मन्नू की मौत हो गई। वह सिक्खों को मिटाने का सपना साथ लेकर ही चला गया। सिक्ख और भी संगठित व मजबूत होते गये। लाहौर पर मीर मन्नू की बेगम का नियंत्रण हुआ। बाद में अदीना बेग सूबेदार बन बैठा। मार्च, सन् १७५४ ई. में सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया ने लाहौर पर जोरदार हमला किया और मुगलों को भारी क्षति पहुँचाई। सन् १७५६ में उन्होंने रिआड़की पर बाकायदा कब्जा कर लिया। इसी वर्ष अब्दाली ने चौथा हमला किया। अगले वर्ष जब वह वापिस लौट रहा था, सिक्खों ने कई स्थानों पर उससे लूट का माल छीना। सिक्खों ने पंजाब को अहमद शाह अब्दाली के लोगों से मुक्त करने की योजना बनाई। इसके लिए दो दल बनाए गए। एक दल का नेतृत्व सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया को और दूसरे दल का नेतृत्व सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को सौंपा गया। इससे सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया की कौम में स्वीकार्यता और प्रभाव का पता चलता है। इस सैनिक अभियान में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और मिशन को सफलता दिलाई। सभी उनकी वीरता के साथ-साथ उनकी दूरदर्शिता के भी कायल थे। जब अदीना बेग पंजाब का नवाब बना तो उसने पुनः सिक्खों पर अत्याचार करने आरंभ कर दिये। उसने रामगढ़ किले को घेर लिया। उस समय सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया किले में ही मौजूद थे। युद्ध में उन्होंने महान वीरता का परिचय दिया। सन् १७६२ में अहमद शाह अब्दाली से सिक्खों का भीषण युद्ध हुआ, जिसमें बुरी तरह से घायल सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया को बचाने में भी उनकी सूझबूझ और वीरता काफी काम आई थी। अब्दाली के इस हमले और श्री हरिमंदर साहिब को ढहाने का बदला लेने से लेकर कसूर विजय सहित सभी युद्धों में उनकी भूमिका प्रभावशाली रही। सन् १७६७ में जब अब्दाली पुनः लौटा और हिंदुस्तान पर आक्रमण किया, तो सिक्खों ने उसे भरपूर जवाब देने की रणनीति तैयार की। २० जनवरी, सन् १७६७ को ब्यास नदी के किनारे बड़ा युद्ध हुआ, जिसमें सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया गंभीर रूप से घायल हुए थे। मई में अब्दाली दिल्ली से वापिस लौटा, तो सिक्खों से पुनः उसका भीषण युद्ध हुआ। इस युद्ध में उसकी करारी हार हुई। यह अब्दाली का अंतिम हमला था। सिक्खों ने पूरा क्षेत्र पठानों से मुक्त करा लिया। सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया दुआबा के बड़े क्षेत्र पर अपना राज्य कायम करने में सफल रहे। उन्होंने श्री हरिगोबिंदपुर को अपनी राजधानी बनाया। सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया ने एक और महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने तरनतारन की सराय नूर (नूर दीन की सराय) को तोड़ कर गुरुद्वारा तरनतारन साहिब

का निर्माण कराया। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार सरदार हजारा सिंघ ने अपनी पुस्तक में उद्धृत किया है कि श्री गुरु अरजन साहिब के काल में वहां सरोवर और गुरुद्वारे के लिए तैयार करवाई गई ईंटों को नूर दीन का पुत्र अमीर दीन जबरन उठवा कर ले गया था। उस समय श्री गुरु अरजन साहिब ने सिक्खों को शांत करते हुए वचन किया था कि एक दिन आएगा, जब कोई सिक्ख इन ईंटों को वापिस लाएगा और उन्हें उसी उपयोग में लाया जाएगा, जिसके लिए ये बनवायी गई थीं। गुरु साहिब के वचन अक्षरशः सत्य सिद्ध करने का सौभाग्य सरदार जस्सा सिंघ को प्राप्त हुआ था। अब उनका राज्य काफी विस्तृत हो गया।

सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया का व्यक्तित्व ऐसा था जिस पर सिक्ख कौम का भरोसा सरलता से टिक जाता था। उन्होंने अपनी विश्वसनीयता बनाई थी। अब 'दल खालसा' के गठन के समय बनी मिसलों का राज्य यमुना से लेकर अटक तक स्थापित हो गया था। 'हिस्ट्री ऑफ पंजाब हिल्स स्टेट्स' के अनुसार, सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया पहले सिक्ख थे, जो कांगड़ा, नूरपुर और चंबा के पहाड़ी इलाकों को भी अपने राज्य में मिलाने में सफल रहे थे। सन् १७६८ में सिक्ख मिसलों ने दिल्ली पर हमला कर बादशाह शाह आलम को अपने अधीन कर लिया था। उस समय सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया और सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया बादशाह के निवास लाल किले में घुस गए थे और बादशाह को गिरफ्तार कर लिया था। बाद में सिक्ख फौज वापिस पंजाब आकर राज्य करने लगी।

ज्ञानी गिआन सिंघ ने सरदार जस्सा सिंघ को प्रतापी शासक कहा है। उपलब्ध जानकारियों के अनुसार उनका राज्य लगभग तीन सौ मील लंबा और लगभग पौने दो सौ मील चौड़ा था। उनकी दयालुता और न्याय के अनेक किस्से मिलते हैं। एक बार किसी ब्राह्मण ने फरियाद की कि उसकी दो बेटियों को हिसार का नवाब उठा कर ले गया है। उन्होंने हमला कर ब्राह्मण की बेटियों को मुक्त करा लिया और दोषी नवाब को कठोर सजा दी। उनके राज्य में कुछ समय के लिए व्यतिक्रम भी आया, किन्तु वे पुनः अपना राज्य और गौरव स्थापित करने में सफल रहे थे। सरदार जस्सा सिंघ की सफलता का रहस्य उनके व्यक्तित्व में वीरता और सूझबूझ का अद्भुत समन्वय था। यही कारण था कि वे सदैव विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल करने में सफल रहे और गौरवपूर्ण ढंग से जीवन व्यतीत किया। उनका बनवाया रामगढ़िया बुंगा एक भव्य इमारत है और अमृतसर में श्री दरबार साहिब परिसर में स्थापित है। आपके दो पुत्र—— सरदार जोध सिंघ और सरदार वीर सिंघ थे। सन् १८०३ में सरदार जस्सा सिंघ के परलोक-गमन के बाद उनके पुत्र सरदार जोध सिंघ ने राज्य की बागडोर संभाली। सरदार जोध सिंघ भी अपने पिता की तरह ही सुयोग्य सिद्ध हुए।

राज्य सरलता से नहीं मिलते। उन्हें ही राज्य मिलते हैं, जिनमें इतिहास रचने की क्षमता होती है। इसे सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया का जीवन-अध्ययन करके ही जाना जा सकता है।

शूरवीर सिक्ख योद्धा : सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया

*-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत के बाद सिक्खों के लिए ज़बरदस्त संघर्ष का समय था। इस काल में उन्हें न सिर्फ स्थानीय मुगल साम्राज्य के सूबेदारों के विरुद्ध जंग लड़नी पड़ी, बल्कि नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली जैसे विदेशी आक्रमणकारियों के विरुद्ध भी संघर्ष करना पड़ा। ऐसे कष्टदायक हालात में सिक्खों की बागडोर महान सिक्ख जत्थेदारों के हाथ में रही।

अठारहवीं शताब्दी के सिक्ख अपनी अनुपम वीरता, आदर्श आचरण और पवित्र विचारधारा के कारण सिक्ख इतिहास के सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व माने जाते हैं। अठारहवीं शताब्दी के इन महान् सिक्ख योद्धाओं में एक बड़ा ही महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय नाम है—— महान् सिक्ख सिपहसालार सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया।

गुरु-घर का श्रद्धालु एवं बलिदानी परिवार : सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया का जन्म ५ मई, सन् १७२३ ई. को लाहौर के समीप गाँव ईछोगिल (ईचोगिल) में हुआ था। सरदार जस्सा सिंघ के पूर्वज काफी समय से गुरु-घर की सेवा में थे। आपके दादा भाई हरदास सिंघ दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हजूरी सिंघों में से एक थे। भाई हरदास सिंघ लंबे समय तक गुरु साहिब के साथ रहे।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर के पंजाब-आगमन पर भाई हरदास सिंघ बाबा जी की फौज में शामिल हो गये और अनेक युद्ध लड़े। अंततः आप बजवाड़े के निकट शहीद हो गए।

आपके पिता सरदार भगवान सिंघ भी उच्च आचरण वाले सिदकी सिक्ख थे। सरदार भगवान सिंघ ने भी अनेक युद्ध लड़े और सन् १७३८ ई. में वज़ीराबाद के निकट नादिर शाह के लश्कर के साथ लड़ते हुए शहीद हो गए।

पारिवारिक शहीदी परंपरा के वाहक :

परिवार की शहीदी परम्परा का सरदार जस्सा सिंघ के ऊपर भी गहरा प्रभाव पड़ा। आप भी एक बहादुर योद्धा के रूप में बड़े हुए। मात्र १५-१६ वर्ष की आयु में नादिर शाह के विरुद्ध मुगल लश्कर की ओर से लड़ते हुए आपने और आपके जत्थे ने अद्भुत वीरता दिखाई, जिस पर खुश होकर लाहौर के

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना— १४११०१, फोन : ६२३९६-०१६४१*

सूबेदार जकरिया खान ने आपको पाँच गाँवों की जागीर इनाम के तौर पर दी।

पंथ की सेवा : सन् १७४५ ई. के बाद मीर मन्नू के दौर में पंजाब में एक बार फिर सिक्खों पर दमन-चक्र चला दिया गया। ऐसे में एक योजना के तहत सरदार जस्सा सिंघ मीर मन्नू के एक जरनैल अदीना बेग की फौज में घुड़सवार सिक्खों के जत्थे के फौजदार बन गये। यहाँ रह कर सरदार जस्सा सिंघ ने सिक्ख पंथ की ज़बरदस्त मदद की।

१७४८ ई. की बात है—— अदीना बेग की फौज ने सिक्खों के एक किले रामरौणी को घेर रखा था। इस घेरे के दौरान सरदार जस्सा सिंघ अपने जत्थे के साथ सिक्खों से जा मिले और दीवान कौड़ामल्ल की मदद से अदीना बेग को वापस लाहौर भिजवा दिया। बाद में यह किला सरदार जस्सा सिंघ को ही दे दिया गया। सरदार जस्सा सिंघ ने किले का जीर्णोद्धार करवाया और इसका नाम 'रामरौणी' से बदल कर 'रामगढ़' रख दिया। यहीं से सरदार जस्सा सिंघ 'सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया' नाम से विख्यात हो गये।

सिक्खों की हर मुहिम में सहयोग : अहमद शाह अब्दाली के आक्रमणों, मुगलों से युद्धों और सिक्खों द्वारा चलाई गई हर जंगी मुहिम में सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। खालसे की ओर से दिल्ली-विजय की मुहिमों में भी सरदार जस्सा सिंघ हमेशा शामिल रहे। इस प्रकार आप निरंतर अपने विशेष अंदाज़ में सिक्ख पंथ की सेवा करते रहे।

रामगढ़िया मिसल का विस्तार : निरंतर विजयों के फलस्वरूप सन् १७६७ तक सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया का अधिकार एक बड़े क्षेत्र पर हो गया। इस क्षेत्र के अन्तर्गत श्री हरिगोबिंदपुर, कलानौर, बटाला आदि शहर आते थे। इस इलाके से सात लाख रुपये कर एकत्र होता था। कई पहाड़ी इलाके और दोआबा का बड़ा क्षेत्र भी आपके कब्जे में रहा।

अकाल प्रस्थान : सन् १८०३ ई. में, ८० वर्ष की आयु में सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया अकाल प्रस्थान कर गये। आपके पुत्र सरदार जोध सिंघ सन् १८०८ ई. में महाराजा रणजीत सिंघ के सिक्ख राज में शामिल हो गए।

सिक्ख मिसल काल की अद्वितीय धरोहर : बुंगा रामगढ़िया

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'

'बुंगा' शब्द का मूल स्त्रोत फारसी के 'बुंगाह' शब्द को माना जाता है। इसका भावार्थ होता है—— निवास-स्थान या रहने का स्थान। आरंभ में श्री हरिमंदर साहिब श्री अमृतसर के इर्द-गिर्द लगभग ७० बुंगे बने हुए थे। ये बुंगे सिक्ख-मिसलों (जत्थेबंदियों) के प्रमुखों ने बनवाने शुरू किए थे। श्री हरिमंदर साहिब में नत्मस्तक होने के पश्चात वे इन बुंगों में विश्राम किया करते थे। बाद में बने बुंगे धार्मिक संप्रदायों या गोत्रों के नाम पर, जैसे 'बुंगा निर्मलियां', 'बुंगा सोढियां' आदि बने और इनमें श्रद्धालुओं के विश्राम करने की व्यवस्था की जाती थी। धीरे-धीरे बुंगों की संख्या बढ़कर ८४ के लगभग हो गई थी। प्रत्येक सिक्ख सुबह-शाम वाहिगुरु के समक्ष जो अरदास करता है, उस अरदास में भी 'बुंगों' का विशेष रूप से वर्णन किया जाता है, जैसे—— ''सिक्खां नूं सिक्खी दान, केश दान, रहित दान, विवेक दान, विसाह दान, भरोसा दान, दाना सिर दान नाम दान, श्री अमृतसर जी दे दर्शन स्नान, चौंकियां, झंडे, बुंगे जुगो जुग अटल धर्म का जयकार, बोलो जी वाहिगुरु!''

इस आलेख में सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया द्वारा निर्मित करवाए गए प्रसिद्ध व ऐतिहासिक 'रामगढ़िया बुंगा' के विषय में जानकारी दी जा रही है :——

१८वीं शती सिक्खों के लिए अति संघर्षपूर्ण एवं चुनौतीपूर्ण रही है। इस समय के दौरान कई शूरवीर, जांबाज सिक्ख योद्धाओं ने धर्म की आन-बान-शान के लिए, देश एवं कौम के गौरव व सम्मान के लिए, मज़लूमों व स्त्रियों की रक्षा हेतु विदेशी आक्रमणकारियों का डटकर मुकाबला किया। जिन महान, बहादुर, निडर सिक्ख योद्धाओं से जालिम विदेशी हमलावर एवं शासक थर-थर कांपते थे, उनमें रामगढ़िया मिसल के प्रमुख सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया का विशेष रूप से जिक्र किया जाता है। इनका जन्म सरदार भगवान सिंघ के गृह में ५ मई, १७२३ ई. को हुआ था। इतिहासकार डब्ल्यू. एच. मैकलियोड के अनुसार, इनके पैतृक गांव का

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन: ९८७२२-५४९९०*

नाम ईचोगिल (ईछोगिल, लाहौर) है। इनके परिवार को 'भाम्ब्रा परिवार' के नाम से पूरे क्षेत्र में जाना जाता था।

श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर की परिक्रमा में श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए और बाहरी आक्रमणकारियों से श्री हरिमंदर साहिब की रक्षा हेतु बनवाया गया 'रामगढ़िया बुंगा' सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया की अनमोल व अद्‌भुत धरोहर के तौर पर आज भी मौजूद है। श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में बने लगभग ८४ बुंगों में से अब केवल यही एक ऐसा बुंगा बचा है, जो किसी समय सिक्ख मिसलों द्वारा बनाए बुंगों के अस्तित्व का साक्षी है।

''बुंगा' पर्सियन भाषा का शब्द है। इसका अर्थ है—— वह जगह, जहां भिन्न-भिन्न धर्मों के लोग एकत्र होकर बैठ सकें। 'बुंगाह' या 'बुंगा' का अर्थ 'स्थान' भी होता है।''

एक और महत्त्वपूर्ण साक्ष्य उपलब्ध है कि ज्ञासुल लुगार, नवल किशोर प्रेस, पृष्ठ ९० के अनुसार, श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में बुंगे बनने से लंबा समय पहले श्री गुरु रामदास जी तथा श्री गुरु अरजन देव जी ने कार सेवा करने तथा श्री हरिमंदर साहिब में नत्‌मस्तक होने वाली सिक्ख संगत के निवास व लंगर हेतु परिक्रमा के बाहरी स्थान पर छपरियां एवं कच्चे मकान बनाए थे। बाद में कच्चे मकानों की जगह पक्के मकान बन गए और सिक्ख-मिसलों के अस्तित्व में आने के पश्चात् इन मकानों की जगह मिसलों के प्रमुखों ने संगत के विश्राम हेतु बुंगे बना दिए।

पुस्तक 'अहमद शाह तवारीख-ए-पंजाब' (पृष्ठ ३८) के अनुसार, बुंगों के सरदार श्री अमृतसर में आने पर अपने-अपने बुंगे में ही ठहरते थे। इन बुंगों को फिर श्री दरबार साहिब का अभिन्न हिस्सा ही समझा जाने लगा।

इस आलेख में वर्णित 'बुंगा रामगढ़िया' मिसलों के काल की भवन-कला का एक अद्वितीय नमूना (मॉडल) है। इस बुंगे का निर्माण विक्रमी संवत् १८१२ अर्थात् ईस्वी सन् १७५५ में सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया ने २,७५,००० रुपए खर्च कर करवाया था। उस समय श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में अन्य बुंगे भी थे। 'बुंगा रामगढ़िया' की एक मंजिल जमीन के ऊपर तथा तीन मंजिलें भूमिगत (ज़मीनदोज़) हैं। बुंगे की चौड़ाई १५० फुट व लंबाई ८४ फुट है। बुंगे के भीतर प्रवेश करने से पहले एक कुआं दृष्टिगोचर होता है। भूमिगत तीनों मंज़िलें इस कुएं के साथ-साथ हैं। नीचे जाने के लिए एक छोटा-सा द्वार भी बनाया गया है। दूसरा रास्ता ऊपरी मंजिल की ओर से है। कुएं के साथ-साथ

१६-१७ सीढ़ियां (पायदान) उतरने के बाद एक हॉल में से गुजरने पर सामने रामगढ़ियों का ऐतिहासिक 'कौंसिल हाऊस' मौजूद है, जहां पर नानकशाही ईंटों द्वारा बनाए गए सिंघासन पर बैठकर वे अपना दरबार लगाया करते थे। उन्होंने अपना सिंघासन श्री दरबार साहिब में सुशोभित श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के आसन से नीचा रखा था। उनका मत था कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के समानांतर उन्य कोई आसन नहीं लग सकता।

उनके सिंघासन के पीछे और सामने दो शाही कालकोठरियां भी मौजूद हैं, जिनमें अंतरिम (आरजी) तौर पर शाही कैदियों को रखा जाता माना जाता है। पहले इन कोठरियों में कोई झरोखा न होने के कारण सघन अंधेरा रहता था, मगर अब भीतर रौशनी का प्रबंध कर दिया गया है। कुएं के साथ-साथ सटी भूमिगत दो अन्य मंजिलों में तहखाने बने हुए हैं। यहां पर बेशक प्राकृतिक हवा नहीं आती और न ही बिजली का कोई पंखा वर्तमान समय में लगाया गया है, फिर भी बुंगे की अद्‌भुत तामीर के कारण यहां भीतर मई-जून के महीनों में ए. सी. जैसी ठंडक महसूस होती है। 'दु:ख भंजनी बेरी' की तरफ श्री दरबार साहिब की परिक्रमा की ओर इस बुंगे की मज़बूत एवं मोटी दीवारों में प्रकाश की व्यवस्था हेतु खूबसूरत झरोखे बनाए गए हैं। ऊपरी मंज़िल के बड़े हॉल में लाल पत्थर की डाटों में जड़े हुए दिल्ली के लाल किले के स्तंभ तथा एक 'तख्त-ए-ताऊस' ऐतिहासिक सिल (शिला) पड़ी है, इसी 'तख्त-ए-ताऊस' पर बिठाकर मुगल बादशाहों की ताजपोशी की जाती थी। इस में कई बेशकीमती नग व मोती जड़े हुए हैं।

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार सन् १७८३ ई. में जब सरदार बघेल सिंघ, सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया, सरदार गुरदित्त सिंघ, सरदार भाग सिंघ आदि ने दिल्ली पर आक्रमण किया था, तब सरदार रामगढ़िया लाल किले की फतह की निशानी के तौर पर यह सिल, स्तंभ और चार तोपें अपने साथ ले आए थे। इन निशानियों को रामगढ़िया मिसल की सफलता और मुगलिया सरकार की पराजय की सूचक माना जाता है।

बुंगा रामगढ़िया के ऊपर दो सुंदर मीनार बने हुए हैं। इनकी ऊंचाई १५६ फुट है। मिसलों के काल में इन पर 'रामगढ़िया मिसल' का ध्वज लहराता था। इस पर दो स्वर्णिम शेरों की आकृति होती थी। इन मीनारों पर से दुश्मनों की नकलो-हरकत पर निगाह रखी जाती थी। यह ऐतिहासिक बुंगा

सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया का निवास-स्थान, उनकी राजनैतिक व सैनिक शक्ति का मुख्य केंद्र होने के अलावा 'रामगढ़िया मिसल' का केंद्र भी रहा है।

बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि सन् १९८४ में हुए घल्लूघारे (साका नीला तारा) के दौरान सरकारी फौज द्वारा की गई भारी गोलाबारी के कारण जहां श्री अकाल तख्त साहिब व अन्य इमारतों को भारी क्षति पहुंची, वहीं बुंगा रामगढ़िया की इमारत को भी क्षति पहुंची। भीतर तक गोलियों के निशान अब भी मौजूद हैं। गोलाबारी के कारण बुंगे की निचली मंजिल में मैजूद कई बड़े कमरे तथा अन्य स्थान बंद हो गए और भीतर जगह-जगह मलबे के ढेर लग गए। रामगढ़िया भाईचारा द्वारा मीनारों की कार सेवा करवाए जाने के अलावा बाद में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने १८ अप्रैल, २००८ ई. को पुरातत्त्व विभाग के विशेषज्ञों की निगरानी में इस बुंगे का मरम्मत-कार्य आरंभ करवा दिया। बुंगे को और भी हवादार बना दिया गया है। तामीरदारी में चूने का उपयोग किया गया है। इमारत में पड़ चुकी बड़ी दरारों को तथा नीचे की तरफ पड़ी हुई छोटी दरारों को भी ठीक कर दिया गया है। इस ऐतिहासिक बुंगे की मरम्मत का कुछ काम होना अभी भी शेष है। सांस्कृतिक एवं विरासती स्थानों व इमारतों का जीर्णोद्धार होता रहे तो समझिए कि यह जीर्णोद्धार हमारी संस्कृति, विरासत व सभ्याचार का है।

कुछ बुंगे श्री तरनतारन में गुरुद्वारा साहिब के सरोवर के इर्द-गिर्द भी बनाए गए थे। ज्यादातर बुंगे ढहकर इतिहास का हिस्सा बन चुके हैं। कई बुंगों की दीवारों को भिन्न-भिन्न चित्रों द्वारा सजाया गया था। इससे बुंगों का सामाजिक रुतबा ऊंचा हो जाता था। श्री तरनतारन के गांव सठियाला में एक बुंगे की दीवारों को भी चित्रों द्वारा सजाया गया था।

ऐतिहासिक स्त्रोत-साम्रग्री :

१. पुस्तक : जस्सा सिंघ रामगढ़िया, लेखक : डब्ल्यू. एच. मैकलियोड
२. एच. एस. सिंघा (इतिहासकार)
३. पंजाबी ट्रिब्यून (४ मई, २०१६) लेखक : सुरेंद्र कोछड़
४. पुस्तक : ज़ासुल लुगार, नवल किशोर प्रेस, पृष्ठ ८०
५. पुस्तक : अहमद शाह तवारीख-ए-पंजाब, पृष्ठ ३८
६. पंजाबी ट्रिब्यून (२८ मार्च, २०१८)

कविता

सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया

–डॉ. जसप्रीत कौर फलक*

सिंघ सभी दशमेश के, बड़े बहादुर नेक।
जस्सा सिंघ जरनैल थे, उन सब में से एक।

गुरु के चरणों से जुड़ा, था इनका परिवार।
गुरु के घर से था इन्हें, बेहद गहरा प्यार।

दादा जी हरदास सिंघ, गुरु के रहे मुरीद।
कितनी ही जंगें लड़ी, लड़ कर हुए शहीद।

और पिता भगवान सिंघ, अपने पिता समान।
नादिर से लड़ते हुए, किया आत्म–बलिदान।

जस्सा सिंघ ने भी यही, कायम रखी रीत।
युद्ध लड़े, हासिल करी, गुरु–कृपा से जीत।

भले फौज में मिल गए, **
जा मुगलों के पास।
मगर पंथ का भी कभी, न खोया विश्वास।

बढ़–चढ़कर हर मुहिम में,
किया सदा सहयोग।
ताकत का करते रहे, पंथ हेतु उपयोग।

'रामरौणी' को जीतकर, कर डाला उद्धार।
मिसल रामगढ़िया बनी, आप बने सरदार।

सेवा करते पंथ की, जीवन दिया गुज़ार।
फिर अस्सी की उम्र में, त्याग दिया संसार।

ऐसे योद्धा पर हमें, कैसे न हो गर्व!
मना तीन सौवां रहे, जन्म–दिवस का पर्व!

*मकान नं.–११, सेक्टर–१–ए, गुरु ज्ञान विहार, डुगरी, लुधियाना, पंजाब, फोन : ९६४६८६३७३३

**सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया पंथ की सहमति से अदीना बेग की फौज में शामिल हुए थे।

भगता की चाल निराली

*-डॉ. परमजीत कौर**

प्रभु का वियोग ही मनुष्य के सारे दुखों का कारण है। कर्त्तापन का अहंकार, तृष्णा, दिखावे की भूख, दुविधा, ईर्ष्या, प्रेम का अभाव तथा गुरमति के अनुसार जीवन न बनाने के कारण ही जीव अपनी तरफ से सेवा-भक्ति करता हुआ भी अन्तरात्मा से प्रभु के साथ नहीं जुड़ता। मोह के कीचड़ में फंसा हुआ मनुष्य परमात्मा की प्राप्ति के मार्ग पर नहीं चलता। श्री गुरु अमरदास जी का फरमान है :

— इसु जग महि मोहु है पासारा ॥
मनमुखु अगिआनी अंधु अंधारा ।।
धंधै धावतु जनमु गवाइआ
बिनु नावै दुखु पाइआ ।। *(पन्ना १०६७)*
— माइआ का भ्रमु अंधु पिरा जीउ
हरि मारगु किउ पाए ।। *(पन्ना २४७)*

परमात्मा की प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन 'भक्ति' माना गया है। विकारों के विष से भरे संसार-समुद्र को पार करने के लिए परमात्मा की भक्ति मानों जहाज है। श्री गुरु अमरदास जी समझा रहे हैं कि जो जीव प्रभु की भक्ति के रंग में रंगे जाते हैं वे ही उच्च जाति, कुल वाले होते हैं। भक्त ही प्रभु-दर पर शोभा पाते हैं :

भगति रते से ऊतमा जति पति सबदे होइ ।।
बिनु नावै सभ नीच जाति है
बिसटा का कीड़ा होइ ।। *(पन्ना ४२६)*

परमात्मा सर्वकला समर्थ है। उस जैसा अन्य कोई नहीं है। मन में यह दृढ़ विश्वास हो तो ही मनुष्य उसकी भक्ति कर सकता है :

भगति निराली अलाह दी जापै गुर वीचारि ।।
नानक नामु हिरदै वसै भै भगती नामि सवारि ।।
(पन्ना ४३०)

गुरु के शबद की विचार करने से यह बात समझ में आती है। गुरमति में भक्ति से रहित ज्ञान को स्वीकार नहीं किया गया। सतिगुरु से प्रेम जरूरी है जो भक्ति से प्राप्त होता है। श्री गुरु अमरदास जी समझाते हैं कि वही उत्तम भक्ति है, जिससे परमात्मा के साथ प्रेम बना रहे। ऐसी भक्ति गुरु की सेवा तथा सिमरन के बिना नहीं हो सकती :

से भगत से ततु गिआनी
जिन कउ हुकमु मनाए ।।६ ।।
एहा भगति सचे सिउ लिव लागै
बिनु सेवा भगति न होई ।।
जीवतु मरै ता सबदु बीचारै
ता सचु पावै कोई ।। *(पन्ना ५०६)*

बन्दगी करने वाले प्रभु-दर पर सुशोभित होते हैं, सदा प्रभु के प्रेम में रहते हैं :

भगत सचै दरि सोहदे सचै सबदि रहाए ।।
हरि की प्रीति तिन ऊपजी हरि प्रेम कसाए ।।
(पन्ना ५१३)

श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी बाणी द्वारा बार-बार यह दृढ़ करवाया है कि गुरु की शरण के

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६*

बिना प्रभु का प्रेम प्राप्त नहीं होता और न ही उच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त की जा सकती है। गुरु की मति के अनुसार जीवन-यापन किए बिना मन पवित्र नहीं होता और न ही सहज अवस्था बनती है :

बिनु गुर महलु न पाईऐ नामु न परापति होइ।।
ऐसा सतगुरु लोड़ि लहु जिदू पाईऐ सचु सोइ।।
(पन्ना ३०)

गुरु साहिब समझाते हैं कि गुरु के सिक्खों के लिए गुरबाणी ही गुरु है। गुरु की शरण में आने का भाव है गुरु के उपदेश को मन में धारण करना :

— इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि।।
(पन्ना ६४६)

— गुरबाणी वरती जग अंतरि
इसु बाणी ते हरि नामु पाइदा।। *(पन्ना १०६६)*

जिस जीव के हृदय में गुरबाणी बस जाती है, उसका गुरबाणी के साथ प्रेम हो जाता है, तथा वह नाम-प्राप्ति के मार्ग पर चल पड़ता है:

इह बाणी जो जीअहु जाणै
तिसु अंतरि रवै हरि नामा।। *(पन्ना ७९७)*

गुरु साहिब दृढ़ करवा रहे हैं कि गुरमति धारण किए बिना शरीर केवल कर्म करता है, पाठ करता है, जाप करता है, जबकि मन प्राय: भटकता रहता है, परमात्मा के साथ नहीं जुड़ता। इस तरह किए गए शारीरिक कर्म, जप-तप आदि कई बार मन में हउमै (अहंकार) पैदा कर देते हैं। हउमै का परमात्मा के नाम के साथ विरोध है। ये दोनों एक साथ हृदय में नहीं रह सकते :

जपु तपु संजमु होरु कोई नाही।।
जब लगु गुर का सबदु न कमाही।।
(पन्ना १०६०)

— हउमै नावै नालि विरोधु है
दुइ न वसहि इक ठाइ।। *(पन्ना ५६०)*

एकाग्रचित्त होकर परमात्मा के साथ जुड़ना आसान काम नहीं है। कभी जीव का अपना मन रोकता है, तो कभी लोक-लाज रुकावट बन जाती है। इसके अतिरिक्ति भूत काल की स्मृतियां तथा भविष्य की चिंता मनुष्य को सदा उसको स्वयं के साथ जोड़कर रखती है। प्रभु के साथ जुड़ना बड़ा कठिन काम है। भाई गुरदास जी के अनुसार भक्ति का मार्ग बड़ा तीक्ष्ण, तेज धार वाला है :

वालहु निका आखीऐ गुर पंथु निराला।
(वार १३ : १७)

यहां चतुराइयां, बुद्धिमता या यह विचार कि मैं सब कुछ जानता हूं आदि रास्ते की रुकावट बन जाते हैं। गुरु पातशाह सुचेत कर रहे हैं कि हे जीव! यह अभिमान मत कर कि मैं बुद्धिमान हूं। तेरे अंदर परमात्मा से दूरी बनी हुई है। तेरे अंदर मैं-मैं करने वाली मैल है। इस मैल को हरि-नाम में जुड़कर गुरु की शरण में आकर दूर कर! हे मन! तू अपने आप को महत्त्व मत दे! अहंकार में आकर अपना नाश मत कर लेना :

मन तूं मत माणु करहि जि हउ
किछु जाणदा गुरमुखि निमाणा होहु।।
अंतरि अगिआनु हउ बुधि है
सचि सबदि मलु खोहु।।
होहु निमाणा सतिगुरू अगै
मत किछु आपु लखावहे।।
आपणै अहंकारि जगतु जलिआ
मत तूं आपणा आपु गवावहे।।
सतिगुर कै भाणै करहि कार
सतिगुर कै भाणै लागि रहु।।
इउ कहै नानकु आपु छडि सुख पावहि
मन निमाणा होइ रहु।। *(पन्ना ४४१)*

इस कठिनाइयों भरे मार्ग पर चलने के लिए, आत्मिक जीवन-मार्ग के लिए दिशा-निर्देश करते हुए श्री गुरु अमरदास जी बताते हैं कि प्रभु की भक्ति सदा करते रहो! सदा गुरु की शरण में आकर गुरु से सबसे कीमती वस्तु 'नाम' प्राप्त करो! यदि इस जीवन में अपनी मर्जी करोगे तो प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त नहीं कर सकोगे! भक्ति तथा प्रेम का यह रास्ता बड़ी कठिनाइयों से भरा हुआ है। कोई विरला ही इस रास्ते पर चलता है :

साजन मेरे प्रीतमहु तुम सह की भगति करेहो।।
गुरु सेवहु सदा आपणा नामु पदारथु लेहो।।
भगति करहु तुम सहै केरी
जो सह पिआरे भावए।।
आपणा भाणा तुम करहु
ता फिरि सह खुसी न आवए।।
भगति भाव इहु मारगु
बिखड़ा गुर दुआरै को पावए।।
कहै नानकु जिसु करे किरपा
सो हरि भगती चितु लावए।। *(पन्ना ४४०)*

इस मार्ग पर चलने के लिए श्री गुरु अमरदास जी एक अकाल पुरख की भक्ति करने का आदेश देते हुए सावधान कर रहे हैं कि परमात्मा को छोड़कर किसी अन्य की भक्ति जीवन को सफल नहीं करती :

इकि मूलि लगे ओनी सुखु पाइआ।।
डाली लागे तिनी जनमु गवाइआ।।
(पन्ना १०५१)

गुरमति मार्ग पर चलते हुए प्रभु के गुणों का गायन करना तथा श्वास-श्वास सिमरन करना ही भक्ति है :

इकु तिलु पिआरा विसरै भगति किनेही होइ।।
(पन्ना ३५)

श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी बाणी में स्थान-स्थान पर समझाया है कि गुरसिक्ख के लिए प्रभु का सिमरन ही संध्या है, भक्ति है। तंत्र-मंत्र आदि पाखण्डों के लिए गुरु के सिक्ख के जीवन में कोई स्थान नहीं है :

एहा संधिआ परवाणु है
जितु हरि प्रभु मेरा चिति आवै।। *(पन्ना ५५३)*

इसलिए स्वार्थवश झूठी मान-प्रतिष्ठा आदि की प्राप्ति के लिए, दुनिया की प्रशंसा पाने के लिए संसार के लोगों की खुशामद करनी छोड़कर परमात्मा का गुण-कीर्तन तथा नाम-सिमरन करना चाहिए :

दुनीआ न सालाहि जो मरि वंञसी।।
लोका न सालाहि जो मरि खाकु थीई।।१।।
वाहु मेरे साहिबा वाहु।।
गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचा वेपरवाहु।।
(पन्ना ७५५)

नाम को अंदर बसाने के लिए सत्य के मार्ग पर चलना जरूरी है। असत्य के मार्ग पर चलत हुआ जीव परमात्मा से दूर होता चला जाता है। श्री गुरु अमरदास जी के अनुसार :

— सचु वेखणु सचु बोलणा तनु मनु सचा होइ।।
सची साखी उपदेसु सचु सचे सची सोइ।।
जिंनी सचु विसारिआ से दुखीए चले रोइ।।
(पन्ना ६९)

— ऐथै साचे सु आगै साचे।।
मनु सचा सचै सबदि राचे।।
सचा सेवहि सचु कमावहि
सचो सचु कमावणिआ।। *(पन्ना ११६)*

असत्य का मार्ग जीव को गुणहीन कर देता है। गुणहीन मनुष्य का मन काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, निंदा आदि विकारों के कारण अपवित्र

हुआ रहता है। परमात्मा सदा निर्मल है, जो निर्मल मन में ही प्रकट होता हैं :—

— मनु मैला सचु निरमला किउ
करि मिलिआ जाइ।। *(पन्ना ७५५)*
— अउगुणवंती गुणु को नही
बहणि न मिलै हदूरि।।
मनमुखि सबदु न जाणई
अवगणि सो प्रभु दूरि।। *(पन्ना ३७)*
— बाबीहा गुणवंती महलु पाइआ
अउगणवंती दूरि।। *(पन्ना १२८३)*
— दोहागणी महलु न पाइन्ही
न जाणनि पिर का सुआउ।।
फिका बोलहि ना निवहि
दूजा भाउ सुआउ।। *(पन्ना ४२६)*
— इसु देही अंदरि पंच चोर
वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारा।।
अंम्रितु लूटहि मनमुख नही
बूझहि कोइ न सुणै पूकारा।। *(पन्ना ६००)*

माया का मोह सभी विकारों को पैदा करता है। श्री गुरु अमरदास जी के अनुसार जिस कारण से भी जीव को परमात्मा भूल जाता है, वह सब माया है :

एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै
भाउ दूजा लाइआ।। *(पन्ना ९२१)*

यह मोह परिवार, मित्र, सम्बंधी, माता-पिता, स्त्री, धन, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा आदि किसी का भी हो, मन को स्थिर नहीं रहने देता, नाम-सिमरन के मार्ग में बाधक बन जाता है। श्री गुरु अमरदास जी सुचेत कर रहे हैं कि ऋद्धियां-सिद्धियां भी मोह हैं, जो मनुष्य को अहंकार के मार्ग पर ले जाती हैं और वह प्रभु-प्राप्ति के मार्ग से भटक जाता है :

रिधि सिधि सभु मोहु है
नामु न वसै मनि आइ।। *(पन्ना ५९३)*

अहं ऐसा रोग है, जो मन में अशांति, तृष्णा, लोभ आदि को पैदा करता है :

हउमै वडा रोगु है भाइ दूजै करम कमाइ।।
नानक मनमुखि जीवदिआ
मुए हरि विसरिआ दुखु पाइ।। *(पन्ना ५८९)*

माया का मोह ही लोभ का कारण है। लोभ पाप के रास्ते पर ले जाता है :

अंतरि लोभु मनि मैलै मलु लाए।।
मैले करम करे दुखु पाए।।
कूड़ो कूड़ु करे वापारा।।
कुड़ु बोलि दुखु पाइदा।। *(पन्ना १०६२)*

क्रोध भी मन को मलिन कर देता है :

सो सूचा जि करोधु निवारे।।
सबदे बूझै आपु सवारे।। *(पन्ना १०५९)*

माया में लिप्त मनुष्य लोभ के अधीन होकर सिमरन न करते हुए निंदक बनकर, दूसरों के पापों की मैल को धोकर अपने मन के अंदर एकत्र कर लेता है तथा पश्चाताप की अग्नि में जलता रहता है :

— मनमुखु निंदा करि करि विगुता।।
अंतरि लोभु भउकै जिसु कुता।।
जमकालु तिसु कदे न छोडै
अंति गइआ पछुताई हे।। *(पन्ना १०४६)*
— पर निंदा करे अंतरि मलु लाए ।।
बाहरि मलु धोवै मन की जूठि न जाए।।
(पन्ना ८८)

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकार मन का आश्रय लेकर ही दौड़-भाग करते हैं। मन की सभी क्रियाओं का मनुष्य के जीवन पर प्रभाव पड़ता है। मन को मारने का यत्न करना

व्यर्थ है। श्री गुरु अमरदास जी स्पष्ट कर रहे हैं कि जो मूर्ख-गंवार जंगल में मन को मारने गए वे मार न सके। इस मन को गुरु के शबद की विचार से ही मारा जा सकता है अर्थात् वश में किया जा सकता है। जैसे मस्त हाथी को महावत अपने अंकुश से वश में कर लेता है, वैसे ही माया के मोह में मस्त हुए, भटकते हुए मन को गुरु-रूप महावत अपनी ज्ञान रूपी जंजीर से वश में कर सकता है :

— मनु कुंचरु पीलकु गुरू गिआनु कुंडा
जह खिंचे तह जाइ।।
नानक हसती कुंडे बाहरा
फिरि फिरि उझड़ि पाइ।। *(पन्ना ५१६)*
— मारू मारण जो गए मारि न सकहि गवार।।
नानक जे इहु मारीऐ गुर सबदी वीचारि।।
एहु मनु मारिआ ना मरै जे लोचै सभु कोइ।।
नानक मन ही कउ मनु मारसी
जे सतिगुरु भेटै सोइ।। *(पन्ना १०८९)*

पांच विकारों का मुकाबला करने के लिए मन को मजबूत बनाना पड़ता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों के मुकाबले के लिए सत्य, संतोष, दया, क्षमा इत्यादि गुण अंदर होने जरूरी हैं। जो जीव गुरु की शरण लेता है, नाम जपता है, वह मन को वश में करने में सफल हो जाता है।

गुरु साहिब विस्तार से समझा रहे हैं कि गुरमुख सतिगुरु के शबद द्वारा कसौटी पर परख कर मन को मार लेता है भाव मन को माया के मोह की तरफ से रोक लेता है। वह सदा विकारों में प्रवृत्त हुए मन को शुभ गुणों की तरफ प्रवृत कर लेता है :

गुरमुखि आपणा मनु मारिआ
सबदि कसवटी लाइ।।
मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ
मन ही मंझि समाइ।।
मनु जो इछे सो लहै सचै सबदि सुभाइ।।
(पन्ना ८७)

मन को वश में करने के लिए मन के साथ झगड़ा करना पड़ता है। गुरु जी के अनुसार जो मन पर विजय प्राप्त कर लेते हैं वे वास्तव में शूरवीर हैं :

जो जन लूझहि मनै सिउ से सूरे परधाना।।
(पन्ना १०८९)

जो जीव विकारों की तरफ दौड़ते मन को वश में कर लेता है वह सदा नाम-सिमरन में लीन रहता है। वह जीवन तथा मौत को परमात्मा की रजा मानता है, अहंकार, मेर-तेर वाला स्वभाव त्याग देता है, परमात्मा का सामीप्य प्राप्त कर लेता है :

— आपु गवाइआ ता पिरु पाइआ
गुर कै सबदि समाइआ।। *(पन्ना ५६७)*
— दासनि दासु होवै ता हरि पाए
विचहु आपु गवाई।। *(पन्ना ६००)*

प्रभु-मिलाप के लिए मन में वैराग्य होना जरूरी है। प्रभु के नाम-सिमरन से प्रभु का निर्मल भय पैदा होता है तथा मन माया से उपराम हो जाता है :

जां भउ पाए आपणा बैरागु उपजै मनि आइ।।
बैरागै ते हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ।।
(पन्ना ४९०)

श्री गुरु अमरदास जी के मतानुसार सेवा सिमरन में सहायक है। गुरु साहिब ने स्वयं कई वर्ष श्री गुरु अंगद देव जी के दरबार में सेवा करके मिसाल कायम की है। सेवा करने से मन निर्मल हो जाता है, अहंकार दूर हो जाता है तथा सेवक

विनम्रता, दया, संतोष आदि गुणों को धारण कर लेता है :

सतिगुरि सेविऐ मनु निरमला भए पवितु सरीर।।

(पन्ना ६९)

गुरु साहिब ने अंतिम श्वास तक सेवा करने की ताकीद की है :

जिचरु अंदरि सासु तिचरु सेवा कीचै
जाइ मिलीऐ राम मुरारी।। *(पन्ना ९११)*

गुरु जी सेवा करने का तरीका बता रहे हैं कि शरीर तथा मन गुरु को अर्पण करके सावधान होकर सेवा करनी चाहिए। सतिगुरु के सम्मुख हुआ गुरमुख अपना आपा-भाव मिटाता है तथा सारे संसार की प्रशंसा प्राप्त कर लेता है अर्थात् परमात्मा का सामीप्य प्राप्त कर आत्मिक रूप से सर्वोच्च हो जाता है :

— मनु तनु आगै राखि कै ऊभी सेव करेइ।।
इउ गुरमुखि आपु निवारीऐ
सभु राजु स्त्रिसटि का लेइ।। *(पन्ना ६४७)*
— गुर की कार कमावणी भाई
आपु छोडि चितु लाइ।।
सदा सहजु फिरि दुखु न लगई भाई
हरि आपि वसै मनि आइ।। *(पन्ना ६३९)*

मनुष्य कई तरह के भ्रमों में पड़कर दुविधा का शिकार बना रहता है। गुरु साहिब भक्त के जीवन-ढंग के बारे में समझाते हैं कि भ्रम का जाल काटने के लिए गुरु के दर पर जाकर परमात्मा को याद करो! प्रभु सदा अंग-संग है। भ्रम का पर्दा हटाकर हृदय में परमात्मा की ज्योति को टिकाओ! हरि का नाम अमर करने वाला है। यह दारू (नुक्ता) प्रयोग में लाओ! सतिगुरु का हुक्म मानना सीखो तथा प्रेम रूपी आचरण धारण करो! इस तरह लोक तथा परलोक दोनों संवर जाएंगे :

सतिगुरू फुरमाइआ कारी एह करेहु।।
गुरू दुआरै होइ कै साहिबु संमालेहु।।
साहिबु सदा हजूरि है
भरमै के छउड़ कटि कै अंतरि जोति धरेहु।।
हरि का नामु अंम्रितु है दारू एहु लाएहु।।
सतिगुर का भाणा चिति रखहु संजमु सचा नेहु।।
नानक ऐथै सुखै अंदरि रखसी
अगै हरि सिउ केल करेहु।। *(पन्ना ५५४)*

परमात्मा का हुक्म मानना परमात्मा का गुण-कीर्तन ही है। जो प्रभु को अच्छा लगता है, जो प्रभु करता है, उसको अपनी भलाई जानकर प्रसन्नचित्त स्वीकार करना असल भक्ति, जप-तप है, परमात्मा से मिलने का साधन है :

तेरा भाणा मंने सु मिलै तुधु आए।।
जिसु भाणा भावै सो तुझहि समाए।।

(पन्ना १०६३)

श्री गुरु अमरदास जी के अनुसार जो जीव प्रभु के हुक्म पर चलकर परमात्मा का ध्यान करते हैं, उनके सारे पाप, विकार नष्ट हो जाते हैं। उनका अहंकार दूर हो जाता है। वे प्रभु की रजा को मानकर प्रसन्नचित्त रहते हैं। दुख आ जाए या सुख, उनका चित्त सदा स्थिर रहता है। इस तरह वे प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त कर लेते हैं :

से भगत हरि भावदे जो गुरमुखि भाइ चलंनि।।
आपु छोडि सेवा करनि जीवत मुए रहंनि।।

(पन्ना २३३)

परमात्मा की कृपा-दृष्टि जरूरी है। कृपा के बिना मनुष्य हुक्म-रजाई नहीं चल सकता। जिस पर प्रभु कृपा करता है वही नाम-सिमरन करता हुआ परमात्मा का सामीप्य प्राप्त कर लेता है :

सभु को तेरा भगतु कहाए।।
सेई भगत तेरै मनि भाए।।

सचु बाणी तुधै सालाहनि
रंगि राते भगति करावणिआ।। *(पन्ना १२२)*

परमात्मा की कृपा प्राप्त करने के लिए हर समय प्रार्थना करनी चाहिए। जिस भाग्यशाली जीव पर परमात्मा की कृपा हो जाती है उसकी जीवन-शैली संसार के अन्य जीवों से अलग तथा निराली हो जाती है। नाम उसके जीवन का आधार बन जाता है। उसकी सारी इच्छाएं, सारे लालच समाप्त हो जाते हैं। उसके मन की प्रत्येक प्रकार की भूख, चाहे वह तृष्णा की भूख हो, धन की हो, विषयों के रसों की हो, मान-प्रतिष्ठा-प्राप्ति की हो, शान्त हो जाती है। मन में सुख-शान्ति का निवास हो जाता है तथा मन स्थिर रहता है :

साचु नामु अधारु मेरा
जिनि भुखा सभि गवाईआ।।
करि सांति सुख मनि आइ वसिआ
जिनि इछा सभि पुजाईआ।। *(पन्ना ९१७)*

परमात्मा के ऐसे भक्त काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों से प्रभावित नहीं होते। वे अपने परिवार का पालन-पोषण करते हुए, अपने कर्त्तव्यों को पूरा करते हुए निर्लिप्त रहते हैं। उनका आचरण उच्च हो जाता है। वे बहुत थोड़ा बोलते हैं, थोड़ा खाते हैं तथा थोड़ा ही सोते हैं। वे किसी की खुशामद नहीं करते, सदा सत्य पर पहरा देते हैं। निंदा या स्तुति उनके मन को भटकाती नहीं। उनके लिए प्राप्ति की मंजिलें निरर्थक हो जाती हैं। वे सदा प्रभु के प्रेम-रंग में रंगे रहते हैं। माया के मोह आदि का कोई अन्य रंग उन पर नहीं चढ़ता। परमात्मा का गुण-कीर्तन ही उनकी हर समय की बोलचाल हो जाती है। जो स्वार्थ छोड़कर सेवा-भक्ति के मार्ग पर चलते हैं। ईर्ष्या, द्वेष, निंदा, चुगली का उनके जीवन में कोई स्थान नहीं होता :

— भगता की चाल निराली।।
चाला निराली भगताह केरी
बिखम मारगि चलणा।।
लबु लोभु अहंकारु तजि त्रिसना
बहुतु नाही बोलणा।।
खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा।।
गुर परसादी जिनी आपु तजिआ
हरि वासना समाणी।।
कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली।।
(पन्ना ९१८)

— नानक जिस कउ मसतकि लिखिआ
तिसु सचु परापति होई।। *(पन्ना ७६९)*

संक्षेप में कहा जा सकता है कि परमात्मा की प्राप्ति का मार्ग बहुत कठिनाइयों से भरा हुआ है। वही मनुष्य इस रास्ते पर चलकर जीवन सफल बनाता है, गुरु-शब्द की विचार करके भक्ति कर सकता है, जिस पर कृपा करके प्रभु स्वयं उसको भक्ति में लगाता है :

जिस नो भगति कराए
सो करे गुर सबद वीचारि।। *(पन्ना ४२९)*

सरदार करम सिंघ हिस्टोरियन

– स. सवरनदीप सिंघ नूर*

सरदार करम सिंघ हिस्टोरियन का जन्म १८ मार्च, १८४८ ई. को ज़िला तरनतारन के गाँव झबाल में पिता स. झंडा सिंघ तथा माता बिशन कौर के घर हुआ। भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में श्री गुरु अरजन साहिब जी के समय के प्रसिद्ध सिक्खों के बारे में बात करते हुए, जिसमें भाई लंगाह का ज़िक्र किया गया है—— ''पटी अंदरि चउधरी ढिलो लालु लंगाहु सुहंदा।'' इस परिवार की पृष्ठभूमि उसी भाई लंगाह जी के साथ जुड़ती है। आपके दादा जी का नाम स. हकीकत सिंघ था। पिता स. झंडा सिंघ कई साल अंग्रेज़ फ़ौज में नौकरी कर वापस आए थे। फ़ौज में से रिसाला अव्वल में दफादार के रूप में रिटायर होने पर पेंशन के साथ शाहपुर ज़िले में नयी बनी 'लोयर जेहलम केनाल कालोनी' में दो मुरब्बे (५० एकड़) ज़मीन मिली थी। पूरा परिवार यहीं पर आकर बस गया था।

सरदार करम सिंघ बचपन से ही बहुत तीक्ष्ण बुद्धि और खोजी वृत्ति वाले थे। होश संभालते ही आप अपने घर के पारिवारिक सदस्यों को बड़े अजीबो-गरीब सवाल कर हैरान कर देते थे। आपकी बातें आपकी आयु से ज्यादा बुद्धिमत्ता भरी होती थीं। यही कारण है कि जब आपने भाई अतर सिंघ के जत्थे (पाँच प्यारों) से अमृत छका तो आपका नाम 'महिराज सिंघ' से 'करम सिंघ' रखा गया। भाई जी ने अपकी बातें सुन कर कहा—— ''करम सिंघ तो फिलासफ़र है।''[१]

विद्या- प्राप्ति : आपने गांव झबाल से प्राथमिक शिक्षा हासिल करने के बाद ख़ालसा कालेजिएट स्कूल श्री अमृतसर से मिडल और फिर ख़ालसा स्कूल तरनतारन से दसवीं कक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद सन् १९०२ में एफ. एस. सी. की पढ़ाई के लिए ख़ालसा कॉलेज श्री अमृतसर में दाख़िल हुए। उस समय सिंघ सभा लहर अपने पूरे यौवन पर थी। सिंघ सभा लहर के प्रचारकों की तकरीरों ने नौजवान पीढ़ी के दिल में अपने धर्म की गौरवशाली परंपराओं व शहादत भरे इतिहास के प्रति जानने और गुरु साहिबान के बताए मार्ग पर चलने की गहरी चेतना पैदा की। सरदार करम सिंघ ने अपनी उच्च शिक्षा के लिए विज्ञान विषय चुना था, मगर सिंघ सभा लहर के प्रभावाधीन ऐतिहासिक पुस्तकें पढ़ने का शौक जाग गया। इसी शौक ने आगे चल कर सरदार करम सिंघ को ऐतिहासिक खोज की तरफ प्रेरित किया।

स्व-अध्ययन का प्रभाव : ख़ालसा कॉलेज के विद्वान अध्यापकों की रहनुमाई में सिंघ सभा लहर के विचारों का सदका आपके अंदर अपने धर्म के लिए कुछ कर गुज़रने की इच्छा अंगड़ाइयाँ लेने

*गांव- जोधपुर रोमाणा, जिला- बठिंडा, फ़ोन : ७५८९१-१९१९२

लगी। आपने ऐतिहासिक पुस्तकों का अखंड अध्ययन किया। फुर्सत के समय में वे अपने साथियों के साथ पंथक उन्नति के बारे में विचार करते या पुस्तकों के अध्ययन में जुटे रहते। सिक्ख इतिहासकारों के अलावा आपने हिंदू, मुसलमान और अंग्रेज़ इतिहासकारों की रचनाएं भी पढ़ीं। ''यही वो समय था जब वे इतिहासकारों की रचनाओं की त्रुटियों से अवगत हुए और ऐतिहासिक भ्रमों, मिश्रण और उसके कौमी जीवन पर पड़ते प्रभाव से वाकिफ़ हुए।''[२]

स. हीरा सिंघ दर्द के अनुसार, ख़ालसा कॉलेज में स. अमर सिंघ वासु, स. गुरमुख सिंघ ढोटियां और स. ईशर सिंघ ढोटियां आपके घनिष्ठ मित्र थे। आप चारों दोस्त अक्सर इकठ्ठा होकर पंथक मसलों पर चर्चा करते रहते। इसी चर्चा ने आप चारों शख्सों को कौम की बेहतरी के लिए अपना जीवन अर्पण करने की प्रेरणा दी। स. हीरा सिंघ दर्द लिखते हैं—— ''सरदार करम सिंघ ने कहा कि मैं सिक्ख धर्म की वैज्ञानिक ढंग से खोज करूँगा और सिक्ख इतिहास लिखूँगा, क्योंकि सही इतिहास के बिना न कौमें ज़िंदा रह सकती हैं और न ही आगे बढ़ सकती हैं।'' मास्टर ईशर सिंघ ने कहा, ''मैं धार्मिक ग्रंथों और सिद्धांतों का अध्ययन करूँगा और धार्मिक विद्यालय स्थापित कर सिक्ख नौजवानों को सिक्ख धर्म की शिक्षा देकर सच्चे धर्मी बनाने के लिए अपना जीवन लगाऊँगा।'' स. अमर सिंघ वासु ने कहा, ''मैं अख़बार नवीस और लेखक बनूंगा तथा संपादक व साहित्यकार बनने के लिए अधिक से अधिक शिक्षा प्राप्त कर पंजाबी की तथा पंथ की सेवा करूँगा।'' सरदार गुरमुख सिंघ ने कहा, ''मैं उच्च शिक्षा प्राप्त कर पहले प्रोफ़ेसर, फिर किसी कॉलेज का प्रिंसिपल बन कर विद्या को उन्नति के मार्ग पर लेकर जाऊँगा और विद्या का प्रकाश फैला कर पंथ की सेवा करूँगा।'' इन चारों ने अपने प्रण-पत्र भर कर भाई वीर सिंघ को दे दिए थे। चारों मित्र यह फ़ैसला कर अपने-अपने आशय के मुताबिक अध्ययन करने में जुट गए।''[३]

अपने किये प्रण को पूरा करने के लिए सरदार करम सिंघ दिन-रात लगातार १८-२० घंटे पढ़ते रहते। इस गहरे अध्ययन के फलस्वरूप आपको अपने इतिहास को जानकर, समझकर उसकी त्रुटियों का पता चलता गया। आपको फ़ारसी और अंग्रेज़ी का भी अच्छा ज्ञान हो गया। आपके मन-मस्तिष्क में ऐतिहासिक खोज करने की चिंगारी उठने लगी। आपने पंजाब के इतिहास के बारे में लगभग सभी प्रसिद्ध लेखकों की हासिल किताबों का गूढ़ अध्ययन किया।

शिक्षा छोड़ खोज के लिए निकलना : सरदार करम सिंघ ख़ालसा कॉलेज में पढ़ते हुए १९०५ ई. में फोर्थ ईयर (चौथे साल) तक पहुँच चुके थे। अब तक ऐतिहासिक पुस्तकें पढ़ने का आपका शौक 'जुनून' में बदल चुका था। फोर्थ ईयर के इम्तिहान में मात्र तीन-चार महीने शेष रहते थे कि एक दिन आपने अपने साथियों से कहा कि ''भाइओ! मैं तो अब पढ़ नहीं सकता। मेरा हृदय सिक्ख इतिहास की खोज के लिए और इधर-

उधर बिखरा हुआ मसाला एकत्रित करने के लिए बेचैन हो उठा है। ख़ास कर जब मैं देखता हूं कि सिक्ख राज के समय के अस्सी-अस्सी, नब्बे-नब्बे वर्ष के वयोवृद्ध, जिन्होंने सिक्ख राज की उन्नति और अवनति को आंखों से देखा है या सुना है, अंग्रेज़ों के साथ युद्धों में खुद हिस्सा लिया है, वे एक- एक कर आँखें मूंदते जा रहे हैं। जब मैं किसी एक वयोवृद्ध के मरने की ख़बर सुनता हूं तो मैं महसूस करता हूं कि एक बहुमुल्य व ऐतिहासिक दौलत लुप्त हो गई है। मैं उनसे मिल कर उनके बयान लिखना अति आवश्यक समझता हूं।''[४]

आपके इस निर्णय को सुन कर सभी मित्रों और कॉलेज के प्रोफ़ेसरों को बहुत हैरानी हुई। सभी मिल कर आपको समझाने लगे कि अब जब इम्तिहान में केवल तीन-चार महीने शेष हैं तो शिक्षा अधूरी छोड़ कर इस कार्य में लग जाना, किसी भी तरह जायज नहीं। यह काम इम्तिहान देकर भी शुरू किया जा सकता है। आपका कहना था कि पढ़ाई तो बाद में भी की जा सकती है, लेकिन इन तीन-चार महीनों में जो वयोवृद्ध सिक्ख इतिहास के 'अमूल्य राज' अपने दिल में लेकर ही चले गए, तो वे दोबारा कौम को नहीं मिलेंगे। बहुमूल्य ऐतिहासिक ख़ज़ाना उनके साथ ही चला जाएगा।

आपके पिता जी को जब इस बात का पता चला, तो वे आपके साथ बहुत गुस्सा हुए और आपको दैनिक ख़र्च भेजना भी बंद कर दिया, परन्तु आपने किसी की बात न मानी और गाँव-गाँव जाकर उन वयोवृद्ध लोगों के बयान कलमबंद करने के लिए तैयारी कर ली, जो इस संसार से रुखसत होने के बिल्कुल नज़दीक थे। आपके पास सिर्फ़ पाँच-सात रुपए ही थे। और किसी ने भी आपकी मदद नहीं की। सभी यही समझते थे कि यह सरदार करम सिंघ का जुनून ही है जो पढ़ाई बीच में छोड़ कर वयोवृद्ध लोगों की खोज में निकल पड़ा है।

लासानी मिशन : अपनी कौम के इतिहास की खोज के लिए इतनी तीव्र इच्छा और बेचैनी शायद ही आज तक किसी अन्य इतिहासकार में देखने को मिले। इसी लगन के चलते सरदार करम सिंघ ने कॉलेज की पढ़ाई बीच में छोड़ कर एक बस्ते में कागज़, कलम, दवात डाली और उसे अपने कंधे पर लटका कर सिक्ख राज के समय के वयोवृद्ध लोगों को ढूँढने दूर-दराज के गाँवों की ओर चल दिए। रेलों, लारियों, तांगों के सफ़र के लिए आपके पास पैसे नहीं थे, जिस कारण आप पैदल ही रोज़ाना तीस-चालीस मील सफ़र करते। जहाँ रात होती, उसी गाँव के गुरुद्वारा साहिब में सो जाते। अक्सर परशादा-पानी मिल ही जाता था, मगर कई बार भूखे रह कर भी रात गुज़ारनी पड़ती थी। जहाँ कहीं भी किसी वयोवृद्ध का पता चलता, सब कठिनाइयाँ पार कर, वहाँ पहुँच जाते और उस वयोवृद्ध के बयान अपने पास लिख लेते।

आपने एक बहुत दिलचस्प घटना अपनी डायरी में लिखी है कि जब मैं वयोवृद्ध के बयान एकत्र करने में जुटा हुआ था तो उन दिनों पंजाब में

प्लेग की बीमारी फैल गई। उन्हें किसी ने बताया कि राजा शेर सिंघ के डेरे में उपस्थित रहने वाला एक आदमी तब कादराबाद में रहता था। आप तुरंत उस गाँव पहुंचे, मगर वहाँ प्लेग का प्रकोप कुछ अधिक था और लोग गाँव छोड़ कर सुरक्षित स्थानों की तरफ पलायन कर रहे थे। आपने उस आदमी के बारे में पता किया। वह एक कुएं के निकट रह रहा था और प्लेग के प्रकोप से मरणासन्न था। सरदार करम सिंघ चाहते थे कि वयोवृद्ध सज्जन कुछ होश करे और मैं उसके साथ कुछ बातें कर लूँ, लेकिन वो बुज़ुर्ग उनकी आँखों के सामने ही दम तोड़ गया। सरदार करम सिंघ को इस घटना ने बहुत मायूस किया।

एक बार आप गाँव चेलिआं वाला में पहुँचे तो उस गाँव में भी प्लेग फैली हुई थी। दूसरा, यह गाँव चोरों का गाँव माना जाता था। गाँव के लोग पहले तो आपको गाँव में घुसने न दें, लेकिन फिर आपको लूटने के इरादे से आपके पीछे पड़ गए। गाँव के भाई जी ने आपको बठिया (उपलों का ढेर) में छिपा कर आपकी जान बचाई। आपने ख़ुद लिखा है कि ''मैं उस रात हुंमस भरी गर्मी में कितने ही घंटे उपलों की बुखारची में छिपा रहा।''

इसी प्रकार एक अन्य गाँव में आपको सौ वर्ष से ऊपर के एक वयोवृद्ध के बारे में पता चला। आप उस वयोवृद्ध के घर पहुँचे तो प्लेग के कारण उसकी भी हालत काफ़ी ख़राब थी और घर वाले कहीं दूर जाने की तैयारी में लगे हुए थे। आपने जाते ही उस बुज़ुर्ग के साथ सिक्ख राज के हालात संबंधी चर्चा छेड़ ली। उस बुज़ुर्ग के घर वाले सरदार करम सिंघ के गले पड़ गए और बुरा-भला कहने लगे कि ''कैसे नाज़ुक समय पर आकर बेतुके सवाल कर रहा है। हमें अपनी जान की पड़ी है, तू यह कौन-सी बातें शुरू कर बैठा है। जा, चला जा यहाँ से!'' सरदार करम सिंघ को चिंता थी कि अगर यह बुज़ुर्ग मर गया तो सिक्ख राज की बहुत-सी कीमती जानकारियां अपने साथ ले जाएगा और घर वालों को चिंता थी कि जल्दी चलें, कहीं दूर जाकर अपनी जान बचाएं। सचमुच ही वह वयोवृद्ध कुछ दिनों बाद प्लेग के कारण मर गया। सरदार करम सिंघ के मन पर इस घटना ने भी बहुत गहरा प्रभाव डाला।

इस प्रकार कदस-कदम पर आपको कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जेब में पैसे भी नहीं होते थे और इस महान पंथक कार्य में कोई आपकी मदद करने के लिए भी तैयार नहीं था। आपके अंदर ऐतिहासिक खोज कार्य खोज के प्रति गहरी लगन और दृढ़ता देख कर आपके पुराने मित्र मास्टर ईशर सिंघ, जिन्हें पंद्रह रुपए तनख़्वाह मिलती थी, ने आधी तनख़्वाह आपको भेजनी शुरू कर दी। इस सहायता ने आपको अति मानसिक बल प्रदान किया। आपका गुज़ारा चलने लगा। उनमें से कुछ पैसे यात्रा के लिए इस्तेमाल कर लेते थे। फिर भाई तखत सिंघ फ़िरोज़पुर और भाई मोहन सिंघ वैद्य ने भी आपको सहायता भेजनी शुरू कर दी। फलस्वरूप इस कार्य के लिए आपका और भी उत्साहवर्धन हुआ। स. भुपिंदर सिंघ (ग्रोवर) लिखते हैं, ''प्रत्येक

महापुरुष के जीवन की यह एक साझी सत्यता प्रतीत होती है कि उसके घर-परिवार के लोग उसे भी आम प्रचलित राह पर ही चलते हुए देखना चाहते हैं। वे अपने बच्चे की प्रवृत्ति से अवगत होकर उसे उत्साहित करने का यत्न नहीं करते। यह बात भी ऐसे ही कुर्बानी वाले मुजस्समों की है कि उन्होंने किसी कठिनाई की परवाह नहीं की और अपने निश्चय व निर्णय पर अटल विश्वास रखते हुए आगे बढ़ते गए। अंततः सफलता ने उनके पैर चूमे।''[५]

आपने जिन मुश्किलों के साथ गाँव-गाँव घूम कर वयोवृद्ध लोगों के बयान इकट्ठा किए उनमें से कुछ का वर्णन आपने अपने एक लेख—— 'मेरा पहला यत्न' में किया है, जो कि 'करम सिंघ हिस्टोरियन की ऐतिहासिक खोज, (भाग दूसरा) संपादक हीरा सिंघ दर्द' में दर्ज है। (पंथ-दर्दी लोगों एवं इतिहास में रुचि रखने वालों को इस किताब के तीनों भाग अवश्य पढ़ने चाहिए।)

मक्का-मदीना की यात्रा : सरदार करम सिंघ ने वयोवृद्ध लोगों के बयान इकट्ठा करने के बाद श्री गुरु नानक साहिब द्वारा उदासियों के समय पर मक्का, मदीना और बगदाद की यात्रा करने का मन बनाया, ताकि उधर के मुसलमानों में श्री गुरु नानक साहिब जी के प्रति प्रचलित मान्यताओं का पता लगाया जा सके। समस्या यह थी कि इसलाम धर्म की रिवायतों के मुताबिक केवल मुसलमान ही मक्का की यात्रा कर सकते हैं। ग़ैर-मुसलमानों को मक्का के अंदर घुसने की मनाही है। आपके परम मित्र भाई तखत सिंघ ने आपको मुसलमानी भेस वाले कपड़े बनवा कर दिए और यात्रा के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की। सरदार करम सिंघ मुसलमानी भेस धारण कर कराची जा पहुँचे। वहाँ पहुंच कर आपने हाजियों के एक प्रमुख के साथ मित्रता कर ली। यहाँ प्रकृति ने आपकी बहुत बड़ी सहायता की। हुआ यूं कि हाजियों का प्रमुख बीमार पड़ गया। सरदार करम सिंघ ऐतिहासिक पुस्तकें पढ़ने के साथ-साथ आरोग्यता से सम्बन्धित कई सारे नुस्खों से भी परिचित थे। आपके द्वारा बना कर दी गई दवा से वो प्रमुख जल्द ही स्वस्थ हो गया। वह आपसे बहुत प्रभावित हुआ और भाइयों की तरह प्यार करने लगा। सरदार करम सिंघ द्वारा मक्का की यात्रा से सम्बन्धित बतायी सच्चाई को सुन कर उस सैयद ने पूर्ण सहयोग देने का भरोसा दिया। उस इंसान ने आपको हाजियों का उप-प्रमुख बना दिया। पाँच नमाज़ें पढ़नी आपको आती ही थीं। आपने केश पीछे की तरफ फेंक कर सिर पर सुरमई दसतारा सजाया और मुसलमानी नाम रख कर यात्रा के लिए चल पड़े।

बगदाद पहुँच कर एक बड़ी मस्जिद में जत्थे ने पड़ाव किया। वहाँ कुछ मुसलमानों को आप पर शक हो गया। एक हाजी ने अमृत वेले (प्रभात समय) आपको जपु जी साहिब का पाठ करते सुन लिया था। उन हाजियों ने सरदार करम सिंघ को मुसलमान होने के प्रमाण के तौर पर 'सुन्नत' दिखाने के लिए कहा। आपने उत्तर दिया कि ''माँ-बाप ने अभी मेरी सुन्नत नहीं करवाई।'' उन हाजियों ने कहा कि ''तो फिर ठीक है, हम परसों

जुमे वाले दिन आपकी सुन्नत भी करेंगे और आपके बाल भी कटवाएंगे, ताकि तू पक्का मोमिन बन जाये।''[6]

इस पूरे घटनाक्रम ने सरदार करम सिंघ का मन दुखी कर दिया। केश कटा कर सुन्नत करवानी, अपने गुरु से विमुख होना उन्हें बिल्कुल मंज़ूर नहीं था। आप मन ही मन वाहिगुरु के समक्ष इस संकट की घड़ी में से सकुशल निकलने के लिए अरदास करने लगे। संयोगवश आपके एक पुराने मुसलमान सहपाठी का चाचा वहाँ पुलिस महकमे में आफिसर था। वह गाँव दादन ख़ान (अब पश्चिमी पंजाब में) का निवासी था। आपने तुरंत उसके पास जाकर उसे सारी बात बतायी और सहायता करने के लिए विनती की। उस पुलिस आफिसर ने आपको ढारस बंधाया और आपका सामान भी अपने घर ही मंगवा लिया। आप बहुत बड़ी मुसीबत में से बच निकले। संत जवाला सिंघ ने उस पुलिस आफिसर का नाम 'मुहम्मद आज़ाद आफिंदी' बताया है। आप मक्का तो न जा सके, परन्तु बगदाद में ही कुछ समय रुक कर श्री गुरु नानक साहिब से सम्बन्धित स्थानों के बारे में खोज-कार्य कर वापस आ गए।

स्टेट पटियाला में हिस्टोरियन : सरदार करम सिंघ के ऐतिहासिक खोज-कार्य को उस समय के सिक्ख नेताओं की तरफ से कोई संरक्षण या सहमति नहीं मिल रही थी। पैसो की कमी के चलते यह कार्य जारी रखना संभव नहीं था। काफ़ी सोच-विचार के बाद परिवार के गुज़ारे के लिए अपने मित्र सरदार अमर सिंघ वासु के साथ मिल कर सरगोधा में 'सन्यासी आश्रम' नामक एक दवाख़ाना शुरू कर दिया। आप जी को वैद्यगिरी के नुसखों की बहुत जानकारी थी। दवाख़ाने से आपको अच्छी-खासी आमदनी होनी शुरू हो गई। इतिहास के प्रति लगन के कारण खोजियों, विद्वानों और आम सिक्खों में भी आप अच्छी तरह से लोकप्रिय हो गए। आपके लेख 'ख़ालसा यंगमैन' तथा अन्य बहुत-से प्रमुख अखबारों-रसालों आदि में छपते रहते थे। आपकी ऐतिहासिक रचनाएं पढ़ने के कारण संत जवाला सिंघ आपके साथ बहुत प्यार करने लगे। उन्होंने आपको अपने पास पटियाला बुलाया और आपके साथ बात कर पटियाला रियासत में 'स्टेट हिस्टोरियन' नियुक्त करवा दिया। उस समय सर जोगिंदर सिंघ चीफ़ मिनिस्टर थे। आपने यहाँ आकर 'महाराजा आला सिंघ' नामक पुस्तक लिखी। आपको जल्दी ही राज-दरबार के माहौल से उपरामता महसूस होने लगी। वहाँ का संकीर्ण वातावरण आपकी खोज करने की स्वतंत्र रुचि के अनुसार नहीं था। जल्दी ही आपने इस नौकरी को छोड़ दिया।

कृषि-कार्य करना : पटियाला रियासत की नौकरी छोड़ने के बाद आपने अपने गुज़ारे के लिए एक 'चित्र कंपनी' खोलने का मन बनाया। इस काम के लिए आपने कलकत्ता जाकर पहले डिज़ाइन और ब्लाक आदि बनाने का पूरा काम सीखा, फिर सिक्ख शहीदों की तस्वीरें बना कर बेचनी शुरू कर दीं। कुछ समय बाद इस काम में भी आपकी रुचि स्थिर न रह सकी।

फिर आपने नवीन ढंग के साथ खेती करने का विचार बनाया। गाँव पतारसी (जिला पटियाला) में ज़मीन ख़रीद कर खेती करनी शुरू कर दी। यहाँ पर उनकी एक आँख भी चली गई। आप ऊँट पर चढ़ कर कहीं जा रहे थे तो बायीं आँख में बबूल का काँटा चुभ गया। डॉक्टरों ने आँख पर पट्टी बाँध कर कुछ दिन के लिए पढ़ने-लिखने का काम बिल्कुल बंद करने को कहा, परन्तु उन दिनों में आपको कोई दुर्लभ पुस्तक प्राप्त हुई थी तो आप पढ़ने का शौक त्याग न सके। नतीजतन आपकी एक आँख सदा के लिए चली गई।

स. भुपिंदर सिंघ (ग्रोवर) लिखते हैं, ''खेती के काम में उन्हें शुरू से ही बहुत रुचि थी। इससे सम्बन्धित उन्होंने काफ़ी पुस्तकें भी पढ़ी हुई थीं। कुछ समय पश्चात् उन्हें नैनीताल (उत्तराखंड) में ज़मीन के बारे में पता चला। उन्होंने वहाँ तीन हज़ार बीघा ज़मीन ख़रीद कर बड़े स्तर पर काम शुरू किया। बाहर से मशीनें मंगवाईं और पूरे खेत में लोहे की बाड़ लगवाई। उस समय उन्होंने 'नया गांव' में अपना निवास रखा।''[७]

सरदार करम सिंघ ने कृषि-कार्य में भरपूर मेहनत की। इस काम में से आपको जितना भी अतिरिक्त समय मिलता, वे उसे पढ़ने-लिखने में ख़र्च करते। आपने प्रमुख रूप से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ज्योति-जोत समाने से लेकर माहाराजा रणजीत सिंघ तक का समय अपने खोज-कार्यों के लिए चुना था। अपनी भ्रमण-फेरियों, दुर्लभ पुस्तकों के अध्ययन, हस्त-लिखितों और पूछ-ताछ के माध्यम से आपने बहुत सारा ऐतिहासिक मसाला इकट्ठा कर लिया था। शायद ही कोई पुस्तकालय ऐसा हो जहाँ आप न गए हों। पंजाब पब्लिक लायब्रेरी, पटियाला, बदायूँ, दरभंगा, अलीगढ़, कलकत्ता के अलावा एशियाटिक लायब्रेरी में जाकर भी आपने सिक्ख राज से सम्बन्धित पुस्तकों को पढ़ कर नोट तैयार किए। अठारहवीं सदी का सिक्ख इतिहास बड़ी कुर्बानियों भरा था। किसी भी विद्वान ने इस समय का इतिहास शृंखलाबद्ध ढंग से नहीं लिखा था। इस समय का सटीक और शृंखलाबद्ध इतिहास पंजाब तथा विशेषत: सिक्ख कौम की चढ़दी कला और भविष्य के लिए रौशनी-मिनार था। सरदार करम सिंघ ने काफ़ी हद तक इतिहास में पड़ी उलझनें सुलझा ली थीं। आपने १३-१४ कापियां फुट- नोटों की भर ली थीं। आपकी याद-शक्ति भी बड़ी कमाल की थी। कोई भी पुस्तक एक ही बार पढ़ने पर आपको याद हो जाती थी। आपकी इच्छा ब्रिटिश म्यूज़ियम लंदन में जाकर भी खोज करने की थी। बहुत-सी दुर्लभ पुस्तकें हज़ारों रुपए ख़र्च कर आपने इकट्ठा कीं। सैकड़ों किताबों की नकल लेकर आए। आपका इरादा था कि दो-तीन वर्ष कृषि-कार्य में खूब मेहनत कर उसे पक्का धरातल प्रदान कर दूं, फिर नैनीताल या कहीं और डेरा जमा कर बैठूंगा, तो साल-छ: महीने में ही सारा इतिहास शृंखलाबद्ध लिख लूँगा।

तपेदिक का हमला : सरदार करम सिंघ के जीवन का एक मात्र मकसद इतिहास की प्रमाणिक खोज करना था। बाकी सभी कार्य तो वे

जीवन के लिए गुज़ारा-मात्र करना चाहते थे। आप खोज और अध्ययन के कार्य में इतना डूब जाते थे कि आपको अपने स्वास्थ्य की जरा-भी परवाह नहीं रहती थी। आपने अस्वस्थ अवस्था में रह कर भी खोज-कार्य को निर्विघ्न जारी रखा।

आप पर तपेदिक ने हमला कर दिया। आप ख़ुद दवा आदि के जानकार थे, इसलिए कुछ समय में ही बीमारी को नियंत्रण में कर लिया। उस समय आपके ऐतिहासिक लेख 'फुलवाड़ी' में प्रकाशित होते थे। स. हीरा सिंघ दर्द ने आपको कुछ समय तक पढ़ना-लिखना छोड़ कर स्वास्थय की देखभाल करने तथा आराम करने की सलाह दी, परन्तु आपने पढ़ना-लिखना फिर भी जारी रखा।

अकाल प्रस्थान : सरदार करम सिंघ को पढ़ने-लिखने का इतना शौक था कि आप अक्सर स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही कर जाते थे। नैनीताल में, जहाँ आपकी रिहायश थी, वहाँ मच्छरों की बहुत भरमार थी। अगस्त, १९३० ई. में आपको मलेरिया हो गया। कुछ दिनों के बाद निमोनिया का हमला भी हो गया। आपके शुभचिंतकों ने पहले तो इलाज के लिए वहीं पर दवाएँ भेजीं, लेकिन जब बीमारी लगातार बढ़ती ही गई तो आपको तरनतारन लाया गया। आपके इलाज के लिए पूरी ताकत झोंक दी गई, परन्तु आपका स्वास्थ्य निरंतर बिगड़ता गया। आखिर १० सितंबर, १९३० ई. को शाम के साढ़े पाँच बजे आप सदा के लिए आँखें मूंद गए। तरनतारन में ही आपका अंतिम संस्कार किया गया। आपके अचानक बिछड़ जाने से पंथक-नेताओं, सिक्खी-हितैषियों और विद्वानों को गहरा आघात पहुंचा। आपके जाने से ही बहुमूल्य ऐतिहासिक ख़ज़ाना भी बिखर गया। स. पिआरा सिंघ पद्म ने सरदार करम सिंघ के बारे में अपनी पुस्तक 'कलम के धनी' में लिखा है—— ''स. करम सिंघ जैसे खोजी विद्वान और इरादे के बलवान, साहसी पुरुष थे, वैसे ही उदार, सहायक, धनवान उन्हें नहीं मिले और न ही किसी ख़ास संस्था ने दामन थामा। आर्थिक मजबूरियों के कारण उन्हें सरगोधा में वैद्यगिरी की दुकान 'सन्यासी आश्रम' खोलनी पड़ी। कहाँ जड़ी-बूटियों की रगड़ाइआं और कहाँ किताबों की लिखाई ! इसी प्रकार एक बार उन्होंने 'चित्र प्रकाशक कंपनी' भी बनाई और तस्वीरें छाप कर बेचने लगे। आखिर ऊब कर कृषि-व्यवसाय किया। मगर वे भी आप जैसे नाज़ुक, आलम-फ़ाज़ल को कैसे रास आ सकता था! मिट्टी के साथ संघर्ष और किताबों के साथ प्यार, दोनों अलग-अलग मिज़ाज की माँग करते हैं। इस प्रकार कठिनाइयों से जूझते हुए वे अपनी जान की आहूति के गए।''[४]

सरदार करम सिंघ के अकाल प्रस्थान पर स. हीरा सिंघ दर्द ने 'फुलवाड़ी' का एक पूरा अंक उन्हें श्रद्धाँजलि के तौर पर भेंट किया था, जिसमें प्रसिद्ध पंथक-नेताओं, समकालीन विद्वानों, इतिहासकारों और अध्यापकों के लेख शामिल किये गए थे।

रचना-संसार : सरदार करम सिंघ ने अपना कुल जीवन सिक्ख इतिहास की बाबत खोज-कार्यों में

लगा दिया। इतिहास को तथ्यों के आधार पर नवीन वैज्ञानिक ढंग के साथ खोजने और लिखने का श्रेय आपके सिर सदा के लिए सजा रहेगा। आपने प्रेक्टिकल ढंग से इतिहास में पड़ी दरारों और कमियों को दूर करने का कठिन यत्न किया। आपने पुस्तकालयों में घूम-घूम कर और सिक्ख राज के समय के ज़िंदा बुज़ुर्गों के पास जा-जाकर जितनी ऐतिहासिक सामग्री इकट्ठा की थी और कौम को आपसे जितनी अधिक आशा थी, आपकी बेवक्ती मृत्यु के कारण बहुत थोड़ी पुस्तकें आप कौम की झोली में डाल सके। फिर भी आप जो ख़ज़ाना कौम के लिए छोड़ गए हैं, वह युगों-युगों तक कौम के लिए बहुत कीमती है। आपके द्वारा लिखी बहुत-सी पांडुलिपियों, ऐतिहासिक लेखों के अलावा आपकी जो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, वे——'बंदा बहादर', 'कत्तक कि विसाख', 'जीवन हरनाम कौर', 'जीवन सदा कौर', 'बंदा कौन था?'' (उर्दू), 'महाराजा आला सिंघ', 'गुरपुरब निरणै', 'अमर ख़ालसा', 'गुर गाथा'।

पटियाला निवास के दौरान आपने स्कूलों के लिए बहुत-सी पाठ्य-पुस्तकें भी लिखीं। कई ऐतिहासिक लेख, बुजुर्गों के बयान और काज़ी नूर मुहम्मद के जंगनामे से सम्बन्धित लिखे लेख उस समय 'फुलवाड़ी' में प्रकाशित होते रहे हैं।

गृहस्थ जीवन : स. हीरा सिंघ दर्द ने लिखा है कि आपका विवाह कॉलेज पढ़ते समय बीस-बाईस वर्ष की आयु में ही हो गया था। आपके घर चार पुत्रों का जन्म हुआ। आपकी पत्नी आपसे पहले ही अकाल प्रस्थान कर गई थी।

सरदार करम सिंघ को कौम की चढ़दी कला और शाश्वत नवीनता के लिए इतिहास की महानता का जितना ज्ञान हासिल था, उससे हम वंचित रह गए हैं, परन्तु आपका जीवन इतिहास की खोज की प्रेरणा देने के लिए सदा एक मिसाल बन कर रहेगा। अगर इतिहास की खोज के प्रति लगाव रखने वाले नौजवान अब भी मैदान में आकर, उनके दिखाए मार्ग पर चल कर पैरवी करें तो इस पक्ष से हुई हानि की बहुत हद तक पूर्ति की जा सकती है।

हवाले :

१. फुलवाड़ी (मासिक), अक्तूबर-नवंबर १९३०, करम सिंघ अंक, पृष्ठ १०६१
२. भुपिंदर सिंघ (ग्रोवर), करम सिंघ हिस्टोरियन : जीवन ते रचना, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, पृष्ठ ३
३. करम सिंघ हिस्टोरियन दी ऐतिहासिक खोज, संपादक : हीरा सिंघ दर्द, पृष्ठ २१
४. उक्त, पृष्ठ २२
५. भुपिंदर सिंघ (ग्रोवर), करम सिंघ हिस्टोरियन : जीवन ते रचना, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, पृष्ठ ५
६. सिक्ख धर्म विश्वकोश, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला।
७. भुपिंदर सिंघ (ग्रोवर), करम सिंघ हिस्टोरियन : जीवन ते रचना, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, पृष्ठ १०
८. प्रो. पिआरा सिंघ पद्म, कलम दे धनी, पृष्ठ २७२

बच्चों को सिखाएं सिक्ख मार्शल आर्ट : गतका

*-स. गुरप्रीत सिंघ**

आज की जीवन-शैली में जहाँ हम गलत जीवन-जाच के कारण बीमारियों से पीड़ित हैं, वहीं हमारे बच्चे भी बीमारियाँ से अछूते नहीं रहे। बच्चों में भी बढ़ती बीमारियाँ बड़ी चिंता का विषय बनी हुई हैं। बीमारियाँ शारीरिक और मानसिक दोनों तरह की हैं। आश्चर्य की बात है कि मानसिक तनाव का शिकार आजकल बच्चे भी हो रहे हैं, जिसके बारे में कभी सोचा ही नहीं था। बच्चों में बढ़ता मोटापा भी माँ-बाप के लिए चिंता का विषय है, क्योंकि बहुत-सी बीमारियों की जड़ मोटापा ही है। आज के समय में बच्चे इलेक्ट्रॉनिक यंत्र, जैसे टेलीविज़न, मोबाइल, लैपटॉप, कंप्यूटर आदि पर अपना ज्यादातर समय बिता रहे हैं। बच्चों का खेलना भी इन्हीं यंत्रों के माध्यम से प्रफुल्लित हो रहा है। ये इलेक्ट्रॉनिक यंत्र रेडिएशन (अदृश्य घातक विद्युत किरणें) पैदा करते हैं। रेडिएशन के अलावा इन यंत्रों के माध्मय से बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले कई नकारात्मक प्रभाव किसी से छिपे हुए नहीं हैं। शहरों की तो बात छोड़ों, अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी खेल के मैदान नज़र नहीं आते। जहाँ पहले बच्चे खुले मैदानों में घंटों तक खेलते थे, वहीं आजकल इसकी जगह मोबाइल, कंप्यूटर वाले बंद कमरों ने ले ली है। इन विद्युत-यंत्रों में ज़्यादातर बच्चे वीडियो-गेम खेलना ही पसंद करते हैं। इन गेमों की कैटागरी में वे लड़ाई वाली वीडियो गेम ज्यादा रुचि के साथ खेलते हैं। बचपन की आयु में बच्चे और नौजवान फुर्तीले और ऊर्जा (Energy) से भरे होते हैं। कुछ नया सीखने और करने की लालसा के कारण उनका ध्यान स्वाभाविक ही मार्शल आर्ट्स की तरफ ज्यादा आकर्षित होता है। देखा गया है कि लड़ाई वाली फ़िल्में और वीडियो गेम आजकल की नौजवान पीढ़ी बड़े उत्साह से देखना व खेलना पसंद करती है तथा उसी की ही नकल करती है। इस प्रसंग में जो कुछ भी आजकल के नौजवान बच्चे करते हैं, इसके गलत प्रभाव भी देखने को मिलते हैं। नौजवान बच्चे ज़िद्दी, झगड़ालू, मनमर्ज़ी के मालिक, गुस्सेखोर, पराजय को बरदाश्त न करने वाले, सहनशीलता की कमी, नैतिकता की कमी, विजय के लिए लगातार संघर्ष करने की कमी और ज़िंदगी के उतार-चढ़ाव में छोटी-छोटी बात पर आत्म-हत्या करने तक भी चले जाते हैं। कहने से तात्पर्य, ऐसे अवगुण भी इस इलेक्ट्रॉनिक मीडिए और वीडियो गेम की ही देन हैं, जो कि मानसिक

*गतका मास्टर, शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज, श्री अमृतसर-१४३००१, फोन : ९३५७१-९७६३३

तनाव से उत्पन्न गलत आदतें हैं। उपरोक्त सभी गलत आदतों, समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए माता-पिता को बच्चों के स्वभाव और रुचि के मुताबिक बहुपक्षीय अनुकूलता (Fitness) के लिए बच्चों को मार्शल आर्ट्स की तरफ प्रेरित करना चाहिए।

सिक्ख मार्शल आर्ट 'गतका' एक अच्छा विकल्प है : मार्शल आर्ट्स के अभ्यास से जहाँ बच्चे का स्वास्थ्य ठीक रहता है, वहीं उसके अंदर नैतिक गुणों का विकास भी होता है। 'गतका' जहाँ तंदुरुस्ती का साधन है, वहीं इस खेल को खेलते हुए बच्चे के अंदर अनुशासन और दूसरों का सम्मान करना आता है। गतका सीख कर वह आत्म-रक्षा और मुश्किल हालात में ख़ुद को बचा सकने (Self Defence) के योग्य होता है। इससे दूसरों के साथ सहयोग और आत्मनियंत्रण (Self Control) की कला उसके व्यक्तित्व में निखार लाती है। इस प्रकार उसका संपूर्ण विकास होता है। गतका, वास्तव में बाणी और बाणे की कला है। गतके का खिलाड़ी इस कला की वजह से गुरु-घर से ऊँचे आचरण का धारक बन विशुद्ध विचार और गुरबाणी की जन्म-घुट्टी लेता है। सेवा, सिमरन और ज़ुल्म के विरुद्ध डटना, निडर स्वभाव, दीन की रक्षा जैसे बड़े गुण उसके अंदर सहजता से आ जाते हैं। सिक्ख शस्त्र-विद्या मार्शल आर्ट गतका की वजह से उसे गुरु-घर से शारीरिक तंदुरुस्ती, फुर्ती और नाम-सिमरन, गुरबाणी की रहमत मिलती है। गतके द्वारा बच्चों को अपने सभ्याचार, मातृ-भाषा, गुरमुखी के साथ जुड़ने का अवसर मिलता है, क्योंकि गतका सिखाने के लिए जो प्रशिक्षक या उस्ताद हैं, वे भी बाणी-बाणे, मातृ-भाषा पंजाबी तथा अपने सभ्याचार के साथ जुड़े होते हैं। इसके माध्यम से नौजवान नशे की भयानक और घातक लत से भी बचता है। गतका हमेशा चढ़दी कला (उत्साहपूर्वक) रहना सिखाता है। गतके के खिलाड़ी में एक बड़ा गुण यह है कि चाहे किसी भी तरह के हालात हों, उनके विरुद्ध संघर्षरत् रहना और विजय प्राप्त करना गतकेबाज़ के प्रण में होता है। गुरबाणी के फरमान के अनुसार—— ''भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन'' जैसे गुणों का गतकाबाज़ धारक बन जाता है। गतकाबाज़ अखाड़े में उस्ताद का, घर में माता-पिता का और गुरु-घर में गुरु का आज्ञाकारी बन जाता है। इस प्रकार उसका संपूर्ण विकास होता है और ऐसे संपूर्णता वाले गुण किसी अन्य मार्शल आर्ट में से नहीं मिल सकते, जोकि गतका खिलाड़ी में स्वाभाविक ही आ जाते हैं।

गतके में बच्चों की रुचि कैसे पैदा की जाये? यह एक अहम सवाल है कि बच्चा सिक्ख मार्शल आर्ट 'गतका' क्यों सीखना चाहता है? क्या उसकी गतका सीखने में रुचि है? क्या उसे गतका खेलना या देखना अच्छा लगता है? गतका वह दूसरों के साथ अपने मुकाबले के लिए या आत्म-रक्षा के लिए के लिए सीखना चाहता है?

क्या किसी अन्य को गतका खेलते हुए देख कर उसके मन में उमंग उत्पन्न होती है? क्या वह भी शस्त्र-विद्या सिक्ख मार्शल आर्ट में निपुण होकर श्रेष्ठ गतकाबाज बनना चाहता है? उसे इन बातों के प्रति स्पष्ट होना चाहिए। गतका-प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षण-दाता के सिखाने के ढंग और बच्चे के सीखने के सामर्थ्य पर निर्भर करती है कि वह कितनी जल्दी और कितना बढ़िया गतके का खिलाड़ी बन सकता है। जिस स्कूल या अकादमी या अखाड़े में उसे दाख़िल करवाना हो, माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों को साथ लेकर उस अकादमी या अखाड़े में जाकर वहां की कम से कम तीन क्लास अवश्य देखें। ध्यान देने वाली बात है कि क्लास में बच्चों की संख्या ज़्यादा भी न हो, इस बात का विशेष ध्यान रखें ताकि टीचर, उस्ताद या गतका इंस्ट्रक्टर उसकी तरफ बेहतर ध्यान दे सके। इससे बच्चा प्रशिक्षण के दौरान किसी तरह की चोट आदि से बचा रहेगा। उस्ताद या इंस्ट्रक्टर का ध्यान उन बच्चों या विद्यार्थियों की तरफ रहने से वे बढ़िया ढंग से तैयारी कर सकते हैं। यह भी देखें कि बच्चे की रुचि किस खेल की तरफ ज़्यादा है। गतके में कई प्रकार के शस्त्र होते हैं। उनमें से बच्चे की रुचि का प़ता किया जा सकता है। कई बच्चों या नौजवानों की रुचि स्व-प्रदर्शन की तरफ ज़्यादा होती है और वे अकेले चलाने वाले (Individual Demonstration) शस्त्र (जिसमें दूसरे खिलाड़ी की ज़रूरत नहीं पड़ती) चलाना ज़्यादा पसंद करते हैं। दूसरी किस्म के वे शस्त्र होते हैं, जिनमें साथी खिलाड़ी की या दूसरे खिलाड़ी की ज़रूरत रहती है और दोनों मिल कर आपस में प्रेक्टिस करते हैं या लड़ाई (Fight) करते हैं। इस दौरान हमला करना और अपना बचाव करना सिखाया जाता है। इस द्वंद्व-युद्ध-कला में एक खिलाड़ी अपने शस्त्र द्वारा दूसरे खिलाड़ी पर बल का प्रयोग करते हुए वार करता है और दूसरा खिलाड़ी उसी तकनीक से वार रोक कर वापसी जवाब में अपने शस्त्र के साथ बल का प्रयोग करते हुए जवाबी वार करता है। इस तरह के खेल को मुकाबला या (Fight Event) कहा जाता है।

गतके में चोट लगने का डर कितना कु है?

यह जो गतके का मुकाबला फ्री लाठी या लाठी के साथ होता है, जिसे (Fight Event) कहा जाता है, एक-दूसरे को पीटने के लिए नहीं होता और न ही अपने सामने के प्रतिद्वंद्वी को चोट पहुंचाने के लिए अथवा ज़ख्मी करने के लिए होता है। इस मुकाबले के लिए नियम होते हैं, जिसके अनुसार लाठी के साथ सामने वाले खिलाड़ी को मात्र छूना होता है, जिसका मकसद चोट पहुंचाना नहीं, पुआइंट लेना होता है। जिस खिलाड़ी के ज़्यादा पुआइंट होते हैं उसे विजेता करार दिया जाता है। यदि कोई खिलाड़ी खेल-नियमों का उल्लंघन करता है, जैसे कि तेज़ गुस्से के साथ लाठी मारता है या वास्तव में लड़ने वाली स्थिति पैदा करता है, चोट पहुंचाने की

कोशिश करता है तो उसे फाउल दिया जाता है। ज़्यादा आक्रामक और नियमों से बाहर होकर खेलने पर गलत खेल (Root Fight) तकनीक करार देकर उसे मुकाबले से बाहर कर दिया जाता है। गतका खेल-मुकाबलों के दौरान पूरे बचाव और रक्षा के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले बचाव उपकरण का प्रयोग भी किया जाता है। इस प्रकार गतका खेलते समय चोट लगने का डर नहीं रहता। इस मामले में बेफिक्र हो जाना चाहिए। माता-पिता यह सोचें कि बच्चा जो चुन रहा है, वह उसके लिए सही है। इसके लिए इंस्ट्रक्टर, टीचर या उस्ताद के साथ परामर्श कर लेना चाहिए। उस्ताद की उचित देख-रेख में सही दिशा-निर्देशानुसार, एक ढंग से क्रमवार प्रशिक्षण लेने से गतका खेलने में चोट आदि नहीं पहुंचती। कई माता-पिता के मन में इस बात का भय होता है कि गतका खेलते हुए बच्चा कहीं अपना नुकसान न करवा ले या उसे कहीं चोट आदि न लग जाये। माता-पिता के लिए एक हद तक ऐसा सोचना और उनका डरना जायज भी है, परंतु सिलसिलेवार तजुर्बेकार उस्ताद की निगरानी में प्रशिक्षण लेते हुए ऐसी नौबत कभी नहीं आती। बढ़िया ढंग से अपना बचाव-पक्ष मज़बूत रखते हुए गतका-खेल में चोट नहीं लगती। बाकी प्रत्येक खेल में खेलते हुए खेल के दौरान कभी कोई छोटी-मोटी चोट लग भी जाये तो यह एक आम बात है। दौड़ते हुए भी कोई गिर सकता है, क्रिकेट या फ़ुटबाल खेलते कोई गेंद आदि आकर लग सकती है। बस, इतना ही डर गतका खेलते समय रहता है। जब खिलाड़ी लगातार प्रेक्टिस कर किसी एक खेल या शस्त्र-विद्या में निपुणता हासिल कर लेता है तो यह डर भी ख़त्म हो जाता है।

स्कूल, अकादमी या अखाड़े की चयन : विद्यार्थी के लिए या अपने बच्चे के लिए मार्शल आर्ट गतके की क्लास में भेजने से पहले उसके लिए सही स्कूल, अखाड़ा-अकादमी आदि का चयन करना महत्वपूर्ण होता है। बच्चे को गतके की जिस अकादमी में दाख़िला करवाना है, उसकी पृष्ठभूमि के बारे में अवश्य पता कर लेना चाहिए अर्थात् प्रशिक्षण-संस्था कब से स्थापित है? कितनी पुरानी है? सिखाने वाला कब से प्रशिक्षण दे रहा है? उसका तजुर्बा कितना है? क्या संचालक के पास किसी मान्यता प्राप्त संस्था की मान्यता है? डिग्री-डिप्लोमा आदि है या नहीं? उस संस्था से प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षार्थी किस स्तर तक खेल कर आए हैं? कहीं संचालक या प्रशिक्षण देने वाला किसी आपराधिक गतिविधियों में शामिल तो नहीं है? यदि शिक्षार्थी लड़की है तो स्वाभाविक ही देखना बनता है कि क्या उस अखाड़े में और लड़कियाँ भी आ रही हैं या नहीं? इसके अलावा संस्था के आस-पास रहते लोगों से और वहाँ से प्रशिक्षण ले चुके बच्चों से या उनके माता-पिता से भी संस्था के बारे में बहुत कुछ पता लगाया जा सकता है। यह भी ध्यान देना बनता है कि गतका क्लास,

अकादमी या अखाड़े का माहौल कैसा है। प्रशिक्षण ले रहे बच्चों की आयु और प्रशिक्षण देने वाले की पृष्ठभूमि के विषय में पूरी जानकारी हासिल कर लेनी चाहिए। इस तरह की जानकारी तसल्ली के साथ-साथ यह विश्वास भी दिलाती है कि हमारा बच्चा सही जगह पर जा रहा है। ध्यान देने योग्य है कि यह खेल बहुत सस्ता और सुविधाजनक है, इसलिए गतके की प्रेक्टिस करते हुए बहुत छोटे ग्राउंड और बहुत सस्ते शस्त्रों की ज़रूरत होती है। इसे किसी भी मुहल्ले, पार्क, गुरु-घर, घर के खुले आंगन या खुली छत पर, कच्ची या पक्की जगह पर अंदर या बाहर अर्थात् किसी भी जगह पर आसानी से खेला जा सकता है। यह ध्यान रखना है कि खेलने वाली जगह समतल और सपाट हो। ऊबड़-खाबड़, ऊँची-नीची या कंकड़-पत्थर आदि से भरी जगह न हो। ऐसे में खिलाड़ी के गिरने या चोट लगने का डर रहता है।

प्रशिक्षण के लिए सही उम्र क्या हो?

वैसे तो दूसरे मार्शल आर्ट्स में शिक्षार्थी की उम्र पाँच साल से कम नहीं होनी चाहिए और इससे कम उम्र के बच्चे को दाख़िल भी नहीं करवाना चाहिए, परंतु गतके का इतिहास गवाह है कि यहाँ छोटे-छोटे बच्चे बहुत दिलेरी के साथ माहिर उस्तादों की देख-रेख में बहुत ही बढ़िया प्रदर्शन करते हैं। इस प्रकार के कई बच्चे गतका मुकाबलों, प्रदर्शनियों, स्टेजों और टेलीविज़न मीडिया आदि में आम ही खेलते हुए देखे जाते हैं। इस संबंध में हमारे पास दसम पातशाह साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज के साहिबज़ादों की लामिसाल उदाहरण है, जिन्होंने अपनी छोटी आयु में ही गतके का प्रशिक्षण हासिल किया और उचित समय आने पर नन्हीं जानों ने बड़ा साका कर दिखाया। उनका साहस, उनकी निडरता भरी अतुल शहादत हमारे लिए प्रेरणादायक है। वास्तव में यह तो शिक्षार्थी और उसके माता-पिता एवं माहिर उस्ताद पर निर्भर करता है कि वह बच्चे को ठीक तवज्जो देकर क्रमशः सही दिशा-निर्देशानुसार प्रशिक्षण शुरू करवाए। बच्चों को सबसे पहले शारीरिक व्यायाम से शुरू करके पैंतरों (Footwork) पर अच्छी तरह मेहनत करवा कर, छोटे-छोटे शस्त्रों के साथ क्रमबद्ध प्रशिक्षण आरंभ किया जा सकता है। बच्चे का दाख़िला करवाने के बाद गतका शुरू करवाने से पहले शस्त्र उठाने से भी पहले निरंतर व्यायाम करवाओ, जैसे दौड़, बैठक आदि। प्रत्येक मांसपेशी की कसरत व उसमें लचीलापन लाने के लिए स्ट्रैचिंग एक्सरसाइज (Stretching Exercise), डंड बैठक आदि की जानी चाहिए। बच्चे की नियमित ख़ुराक का ख़्याल रखें, जिसमें दूध, दही, घी, मक्खन आदि के अलावा बादाम-गिरी, चने, फल-फ्रूट, कच्ची सब्जियाँ आदि बढ़िया खुराक रखनी चाहिए। मार्शल आर्ट 'गतका' की क्लास से पहले पंद्रह मिनट और पंद्रह मिनट बाद में पानी या किसी अन्य किस्म का तरल पदार्थ (Liquid) नहीं लेना

चाहिए। शुरू-शुरू में शिक्षार्थी या बच्चे के शरीर में दर्द होता है और वह थकावट भी महसूस करता है। धीरे-धीरे जब अभ्यास बढ़ता जाता है तो उसे इसमें अच्छा लगता है। बढ़िया ख़ुराक होने से बच्चे में ऊर्जा का स्तर बढ़ता है और वह पहले की अपेक्षा ज़्यादा तंदुरुस्त, फुर्तीला और हल्का महसूस करता है।

'गतका' आत्म-रक्षा के रूप में : मार्शल आर्ट 'गतका' सीखने का मुख्य मकसद आत्म-रक्षा ही होता है। प्रत्येक को ही अपनी आत्म-रक्षा लिए यह सीखना ज़रूरी है। इसकी स्त्री या पुरुष दोनों को ज़रूरत है। लड़कियों को तो ख़ास तौर पर आजकल के हालात में घर से बाहर, यहाँ तक कि कई बार घर के अंदर भी हिंसा का शिकार होना पड़ता है। लड़कियों के साथ गली-मुहल्ले, बाज़ारों, स्कूलों-कॉलेजों आदि में छेड़ख़ानी और छीना-झपटी की घटनाएँ आम ही होती हैं। ऐसे में लड़कियों को आत्म-रक्षा के लिए तैयार रहना चाहिए। आए दिन अखबारों में दहेज़-पीड़ित स्त्रियों को आग लगने की खबरें, ससुराल परिवार और पति द्वारा घरेलू हिंसा का शिकार आदि जैसी खबरें अक्सर पढ़ने को मिलती हैं। यदि लड़कियाँ गतके में निपुण हों तो वे आत्म-रक्षा करने में सफलता प्राप्त करें। गतका लड़कियों के लिए बहुत ही लाभप्रद है। यह गुरु साहिब की बख़शीश है। सिक्ख मार्शल आर्ट 'गतका' सीखने के बाद वे अपनी आत्म-रक्षा ख़ुद कर सकती हैं। लड़कियों में आत्मविश्वास पैदा होता है। झिझक, शर्मीला-पन, डरपोक होने की जगह उनमें निर्भयता वाली, सिंघनियों वाली, दलेराना सोच पैदा होती है। फिर पिता दशमेश की पुत्रियां 'कौर' रूप में ज़ालिम के विरुद्ध डट कर खड़ी हो जातीं हैं और समाज में सम्मान प्राप्त करती हैं।

अन्य मार्शल आर्ट्स की शैलियां : वर्णनीय है कि आजकल कई तकनीकें आत्म-रक्षा के लिए प्रचलित हैं, जैसे—— जूडो, कराटे, ताईकवांडो, कुंग फू, किक बाक्सिंग आदि। इन सभी में 'गतका' अपना पृथक स्थान रखता है। बेशक मार्शल आर्ट के साथ जुड़ी प्रत्येक शैली आत्म-रक्षा के लिए समान रूप से लाभदायक होती है, परंतु गतका सिक्ख इतिहास से जुड़ी जंगजू शैली और पंजाब का गौरवमयी, सांस्कृतिक खेल होने के नाते हमें अवश्य इसे प्राथमिकता देनी चाहिए, क्योंकि इससे बच्चा अपनी विरासत, इतिहास और धर्म के साथ जुड़ेगा। जिस प्रकार जूडो में हाथ-पैर और टांगों को हथियार के रूप में प्रयोग कर सामने वाले पर हमला करना सिखाया जाता है और दक्षिणी कोरिया के राष्ट्रीय खेल 'ताईकवांडो' में भी हाथ-पैर से हमला करना सिखाया जाता है, इसी प्रकार 'कुंग फू' जापान का खेल है और चीन 'कुंग फू' के साथ जुड़ी इस शैली में शरीर व दिमाग़ को सामूहिक रूप से काम करने की कला सिखायी जाती है, ताकि मुसीबत के समय व्यक्ति इसके ज़रिये आत्म-रक्षा कर सके। इसी प्रकार

गतका, जो कि एक लाठी-फ्री की लड़ाई होती है, इसे प्रशिक्षण के लिए ढाल-कृपाण की जगह इस्तेमाल किया जाता है। इसमें भी शस्त्रों द्वारा और बिना शस्त्रों के हाथ-पैर द्वारा अपने पैंतरों का इस्तेमाल करते हुए हमले और बचाव के तरीके के बारे में बताया जाता है। भक्ति और शक्ति के संगम से शरीर, दिमाग़ और मन की ताकत को एकत्रित कर शक्ति तथा एकाग्रता मिलती है, जिसे आजकल (Meditation) कहा जाता है। गतका-खिलाड़ी इस एकाग्रता का प्रयोग मुसीबत के समय फ़ैसले लेकर आत्म-रक्षा के लिए करता है। निडर भावना का विकास गुरबाणी के माध्यम से होता है। गुरबाणी हमें निर्भय और निर्वैर जैसे गुणों का धारक बनाती है। गुरबाणी के ओट-आसरे से सिक्ख गतकई सिंघ (शेर) के रूप में ''अजीत हैं अभीत हैं'' वाली स्थिति को प्राप्त होता है। सही गतकेबाज कभी अपने प्रशिक्षण का दुरुपयोग नहीं करता और भय-भावना में विचरण करता हुआ शुभ गुणों का धारक बन जीवन-निर्वाह करता है। ख़ुशी की बात है कि आजकल गतका खेल का भी अन्य खेल की तरह पंजाब में ग्रेडेशन हो चुका है। गतका के इंटर-स्कूल मुकाबले, इंटर-कॉलेज मुकाबले, इंटरवरसिटी मुकाबले, लगातार करवाए जा रहे हैं तथा गतके के खिलाड़ियों को अन्य खेल की तरह जिला, राज्य, राष्ट्र स्तर पर खेलने का और अपनी काबलियत दिखाने का मौका मिल रहा है। गतका-खिलाड़ियों को उचित मान-सम्मान भी मिल रहा है। स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी स्तर पर गतका खेल के खिलाड़ी नि:शुल्क पढ़ाई कर सकते हैं। यदि बच्चा राष्ट्र स्तर पर गतका खेलों में या राज्य-स्तरीय गतका खेल मुकाबलों में पोज़िशन हासिल करता है तो उसके बोर्ड की कक्षा के परिणाम के समय कुल अंकों में क्रमश: २५ तथा १५ अंक और जुड़ जाते हैं। यह भी विद्यार्थियों के लिए अति लाभदायक है। पढ़ाई के पश्चात् नौकरी हेतु चयनित होने पर भी ग्रेडेशन सर्टिफिकेट का फ़ायदा मिल रहा है। अन्य खेल के खिलाड़ियों की तरह गतका खिलाड़ी को भी प्राथमिकता के आधार पर स्पोर्ट्स कोटे में रखा जाता है, इसलिए अन्य मार्शल आर्ट्स की जगह हमें हमारी अपनी धरती पर हमारे गुरु साहिबान द्वारा प्रदत्त जंगजू-कला 'गतका शस्त्र-विद्या' को सीखना चाहिए तथा अपने बच्चों को भी सिखाना चाहिए। जो सीखते हैं वे अपने धर्म, अपनी विरासत और सभ्याचार के साथ और भी निकट से जुड़ जाते हैं, गुरमति के धारक बन जीवन व्यतीत करते हैं, क्योंकि गतका-कला में हमें अपनी विरासत की झलक दिखाई देती है। हमें फख्र है अपनी सिक्ख शस्त्र-विद्या पर! परमात्मा करे, हमारा यह मातृ-खेल, विरासती खेल, कौमी खेल दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करे!

ख़बरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य स. निरमल सिंघ हरिआओ के निधन पर एडवोकेट धामी द्वारा शोक व्यक्त

श्री अमृतसर : ९ अप्रैल : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य स. निरमल सिंघ हरिआओ के निधन पर शोक व्यक्त किया है। एडवोकेट धामी ने कहा कि स. हरिआओ गत लंबे समय से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य के रूप में सेवा निभा रहे थे। उन्होंने कहा कि स. निरमल सिंघ ने धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए सराहनीय कार्य किए। उन्होंने कहा कि स. निरमल सिंघ हरिआओ के निधन से उनके परिवार के साथ-साथ सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को भी घाटा पड़ा है। एडवोकेट धामी ने स. निरमल सिंघ के परिवार के साथ शोक व्यक्त करते हुए परमात्मा के समक्ष अरदास की कि वे बिछड़ी रूह को अपने चरणों में निवास प्रदान करें तथा परिवार को ईश्वरीय आदेश मानने का बल प्रदान करें।

सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया की तीसरी जन्म शताब्दी के समागम खालसा फ़तह मार्च के साथ आरंभ

श्री अमृतसर : १६ अप्रैल : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से सिक्ख कौम के महान जरनैल सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया के ३०० वर्षीय जन्म दिवस से सम्बन्धित शताब्दी समागम दिल्ली स्थित गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब से 'ख़ालसा फतह मार्च' के साथ आरंभ हुए। सिक्ख जरनैल सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया ने अपने साथी जरनैलों के साथ मिलकर दिल्ली फतह कर लाल किले पर खालसयी निशान झुलाया था और मुग़ल साम्राज्य का तख़्त-ए-ताऊस हाथियों के पीछे बाँध कर गुरु-चरणों में लाकर श्री दरबार साहिब बुंगा रामगढ़िया में स्थापित किया था। इतिहास के इस वाकया के कारण ही श्री अमृतसर साहिब के लिए दिल्ली से पंथक हर्षोल्लास के साथ 'खालसा फतह मार्च' शुरू

किया गया है। गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब में 'ख़ालसा फतह मार्च' की आरंभता से पूर्व गुरबाणी कीर्तन हुआ और अरदास के पश्चात् श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पवित्र स्वरूप शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने पालकी साहिब में सुशोभित किया। आरंभता के समय प्रबंधकों ने पाँच प्यारे साहिबान, निशानची सिंघों और प्रमुख शख़्सियतों को सिरोपाओ प्रदान किए। गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब से आरंभ हुआ 'ख़ालसा फतह मार्च' दिल्ली के शंकर रोड, पटेल नगर, शादीपुर, मोती नगर, रमेश नगर, राजा गार्डन, राजौरी गार्डन, टैगोर गार्डन, सुभाष नगर, तिलक नगर, जेल रोड, हरी नगर से होता हुआ गुरुद्वारा छोटे साहिबज़ादे, फ़तह नगर पहुँचा। रास्ते में संगत ने उत्साहपूर्वक नगर कीर्तन में हाज़री भरी और कई स्थानों पर लंगर आदि के प्रबंध भी किए। संगत की तरफ से श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पालकी साहिब को सम्मान भेंट किया और पाँच प्यारे तथा निशानची सिंघों को गुरु-बख़शीश सिरोपायो दिए गए। 'ख़ालसा फतह मार्च' के दौरान सिक्ख जरनैलों के ऐतिहासिक शस्त्रों वाली बस संगत के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रही। 'ख़ालसा फतह मार्च' की आरंभता के समय पहुँचे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने सिक्ख संगत को बधाई देते हुए कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा महान सिक्ख जनरैल सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया को याद करते हुए उनकी ३०० वर्षीय जन्म शताब्दी के समागमों की शुरूआत दिल्ली से की गई है। उन्होंने कहा कि ख़ालसा पंथ द्वारा दिल्ली फतह के समय सरदार जस्सा सिंघ द्वारा निभाई गई भूमिका सिक्ख इतिहास की अहम प्राप्ति है, इसीलिए दिल्ली को विशेष समागमों के लिए चुना गया है। उन्होंने बताया कि इसी के अंतर्गत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा दिल्ली में तीन दिवसीय समागम आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज समय की ज़रूरत है कि नौजवानों को सिक्ख इतिहास एवं विरासत के साथ जोड़ा जाए, जिसके लिए शताब्दी समागम अहम भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि आरंभ हुए 'ख़ालसा फतह मार्च' में दिल्ली की विभिन्न सिक्ख जत्थेबंदियों और संगत की तरफ से भरपूर सहयोग मिला है। उन्होंने बताया कि यह फतह मार्च ४ मई को श्री अकाल तख़्त साहिब पर पहुंच कर सम्पन्न होगा। फतह मार्च के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल के

अलावा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल), सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, भाई राम सिंघ, सीनियर अकाली नेता स. बलविंदर सिंघ भूंदड़, स. हीरा सिंघ गाबड़िया, स. परमजीत सिंघ (सरना), जागो पार्टी के प्रधान स. मनजीत सिंघ जीके, दिल्ली कमेटी के प्रधान स. हरमीत सिंघ कालका, महासचिव स. जगदीप सिंघ (काहलों), दिल्ली कमेटी के सदस्य बीबी रणजीत कौर, स. सुखविंदर सिंघ बब्बर, स. कुलदीप सिंघ (भोगल), स. सुखदेव सिंघ रियात, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अपर सचिव स. बलविंदर सिंघ काहलवां, स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, स. बिजै सिंघ, स. सिमरजीत सिंघ, उप सचिव स. तेजिंदर सिंघ पड्डा, स. कुलदीप सिंघ रोडे, दिल्ली सिक्ख मिशन के इंचार्ज स. सुरिंदरपाल सिंघ सुमाना, स. जसवीर सिंघ जस्सी, मैनेजर स. सुखराज सिंघ, इंचार्ज स. मेजर सिंघ, स. मनजीत सिंघ, स. करतार सिंघ, हेॅड प्रचारक भाई सरबजीत सिंघ ढोटियां आदि उपस्थित थे। ख़ालसा फतह मार्च में सहयोगी सिक्ख जत्थेबंदियों द्वारा तैयार की दो प्रदर्शनियाँ संगत के लिए आकर्षण का केंद्र बनी रहीं। ये प्रदर्शनियाँ विशेष गाड़ियों पर सजा कर नगर कीर्तन में शामिल की गईं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल) ने इन प्रदर्शनियों के बारे में बताया कि ख़ालसा फतह मार्च में सिक्ख जरनैलों के इतिहास से संगत को अवगत करवाने के यत्न किये गए हैं। प्रदर्शनियों के ज़रिए दिखाया गया है कि कैसे सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया और उनके साथी सिक्ख जरनैल दिल्ली फतह करने के पश्चात् मुग़ल साम्राज्य के तख्त-ए-ताऊस को घड़ीस कर श्री अमृतसर साहिब ले गए थे। उन्होंने कहा कि यह सिक्ख इतिहास का गौरव है कि सिक्खों ने मुग़ल साम्राज्य का वह तख्त-ए-ताऊस उखाड़ा, जिस पर बैठ कर अत्याचारी बादशाह हुक्म जारी किया करते थे। यह तख्त-ए-ताऊस की सिल आज भी श्री दरबार साहिब स्थित बुंगा रामगढ़िया में मौजूद है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कानूनी शिष्टमंडल ने डिब्रूगढ़ में नज़रबंद नौजवानों के साथ की मुलाकात

श्री अमृतसर : १० अप्रैल : बीते दिनों पंजाब से गिरफ़्तार कर आसाम के डिब्रूगढ़ जेल में बंद किए गए नौजवानों के केस की शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने पैरवी आरंभ कर दी

है। इस सम्बन्ध में डिब्रूगढ़ पहुँचे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वकीलों की तरफ से जहाँ आठ नौजवानों के साथ जेल में मुलाकात की गई, वहीं जेल प्रशासन से इनके केस से सम्बन्धित ज़रूरी दस्तावेज़ भी प्राप्त किए गए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य और सीनियर एडवोकेट स. भगवंत सिंघ सिआलका के नेतृत्व में आसाम गए शिष्टमंडल में एडवोकेट मनदीप सिंघ (सिद्धू) और एडवोकेट रोहित शर्मा शामिल हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी मुख्यालय में मीडिया को जानकारी देते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने बताया कि श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार की तरफ से हुए आदेश के अनुसार डिब्रूगढ़ में राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के अंतर्गत कैद किए नौजवानों के केस की पैरवी की जा रही है। उन्होंने बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कानूनी माहिर स्थानीय स्तर पर जाकर अपना काम शुरू कर चुके हैं। उन्होंने जानकारी दी कि डिब्रूगढ़ में आठ नौजवान नज़रबंद हैं, जिन्हें कानूनी मदद दी जा रही है। एडवोकेट धामी ने बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की कानूनी टीम ने बंदी नौजवानों और डिब्रूगढ़ जेल प्रशासन के साथ मुलाकात कर अगली कार्यवाही की तैयारी कर ली है।

इसी सम्बंध में आसाम से बातचीत करते हुए एडवोकेट सिआलका ने बताया कि डिब्रूगढ़ जेल में बंद आठों नौजवान चढ़दी कला में हैं। उन्होंने बताया कि नज़रबंद किए आठों नौजवानों के साथ मुलाकात करने के लिए डिब्रूगढ़ जेल प्रशसन को प्रार्थना-पत्र देने में स्थानीय वकीलों सहित ज़िला कानूनी सेवा अथार्टी और डिब्रूगढ़ बार एसोसिएशन ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की कानूनी टीम का सहयोग किया है। एडवोकेट मनदीप सिंघ ने बताया कि जेल प्रशासन द्वारा नज़रबंद किए गए नौजवानों को गिरफ़्तार करने के आर्डर तथा अन्य ज़रूरी दस्तावेज़ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की कानूनी टीम को मुहैया करवा दिए हैं, जिसके अंतर्गत अगलीं कानूनी पैरवी जारी रखी जाएगी।

सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की परिक्रमा
में स्थित बुंगा रामगढ़िया का बाहरी चित्र।
चित्र के पीछे श्री गुरु रामदास जी लंगर हॉल की
इमारत नज़र आ रही है।

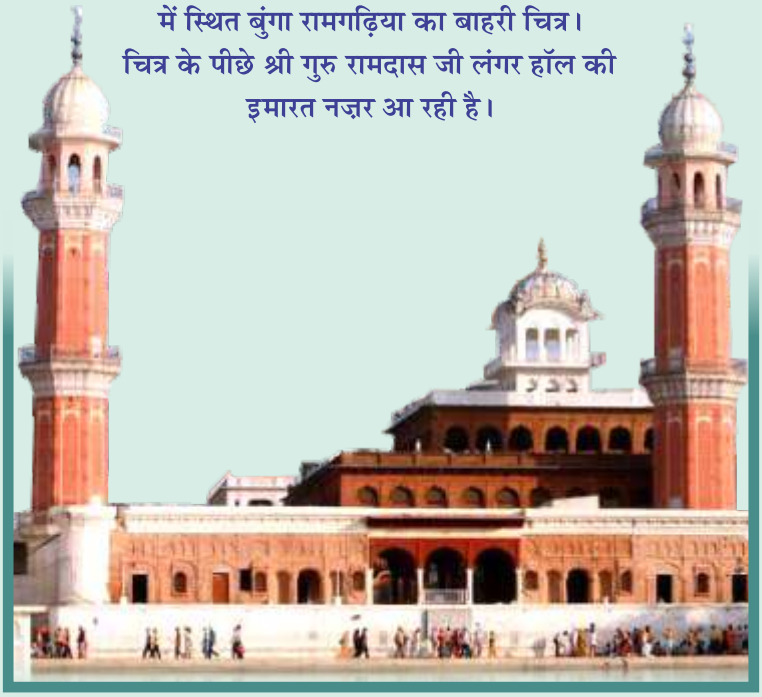

बुंगा रामगढ़िया में संरक्षित ऐतिहासिक पत्थर की सिल, जिसे दिल्ली स्थित मुगलों
के राज्य-सिंहासन से सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया उखाड़ कर ले आए थे।

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN May 2023

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

दिल्ली फ़तह करते समय मैदान-ए-जंग में शौर्य दिखाते हुए
सरदार जस्सा सिंह रामगढ़िया

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh

Date : 7-5-2023